SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 01,
June - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2025
रु.20/-

तिरुपति
श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव

दि. 02-06-2025 से दि. 10-06-2025 तक

दि.06-04-2025 से दि. 14-04-2025 तक ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव अत्यंत वैभव से ति.ति.दे. के द्वारा संपन्न किया। इस संदर्भ में श्री सीताराम कल्याण महोत्सव के अवसर पर दि.11-04-2025 को आं.प्र.राज्य सरकार की ओर से आं.प्र. मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबु नायडूजी ने पवित्र रेशमी वस्त्र को समर्पित किया।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२७)

क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपायवाले विषय में तू शोक करने को योग्य नहीं है।

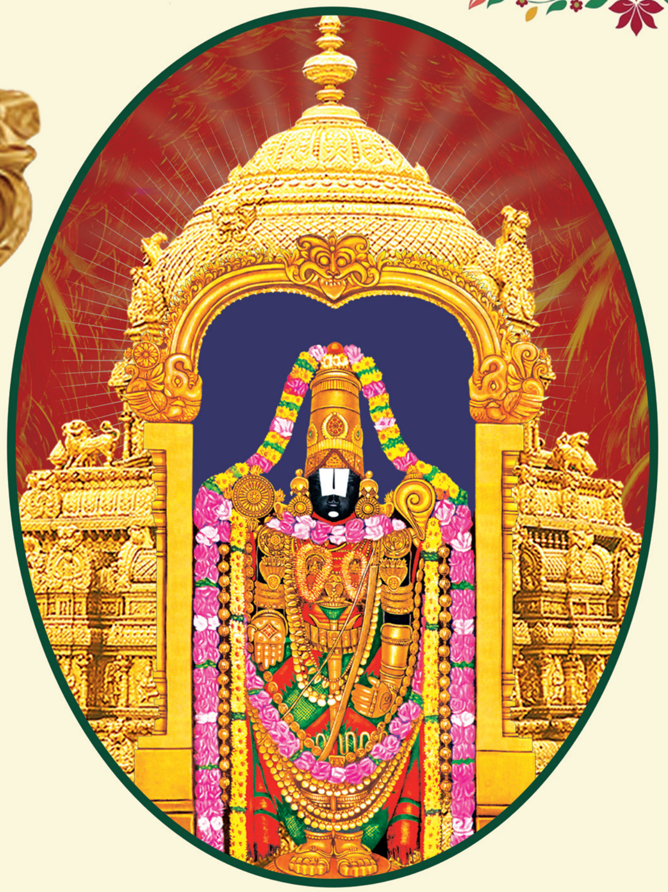

अदिवो अल्लदिवो श्री हरि वासमु
पदिवेल शेषुल पडगल मयमु ।।अदिवो।।

अदे वेंकटाचल मखिलोन्नतमु
अदिगो ब्रह्मादुल कपुरूपमु
आदिगो नित्य निवास मखिल मुनुलकु
अदे चूडुडदे म्रोक्कु डानंदमयमु ।।अदिवो।।

चेंगट नल्लदिवो शेषाचलमु
निंगिनुन्न देवतल निजवासमु
मुंगिट नल्लदिगो मूलनुन्न धनमु
बंगारु शिखराल बहुब्रह्ममयमु ।।अदिवो।।

कैवल्य पदमु वेंकटनगमदिवो
श्रीवेंकटपतिकि सिरुलैनवि
भाविंप सकल संपद रूपमदिवो
पावनमुलकेल्ल पावनमयमु ।।अदिवो।।

सहस्राधिक शेष फणियों से युक्त श्री हरिवास (तिरुमल) का रोमांचक वर्णन मिलता है।

ब्रह्मादियों के लिए अपूर्व वेंकटाचल के निरालेपन का आविष्कार करते हुए वे कहते हैं कि (श्रीहरि निवास होने के कारण) सकल मुनिबृंद का भी आवास स्थान, उस आनंदमय शिखर को नमस्कार करो। यह शेषाचल स्वर्गलोक के देवी-देवताओं का भी स्वस्थान हो गया है। स्वर्ण शिखरों से शोभायमान बहुब्रह्ममय यह शिखर, भक्तजनों के लिए प्राप्त अनायास संपदा है। मुक्ति पद दिलानेवाला यह वेंकटाचल, श्रीवेंकटपति का भाग्य निधान है। सकल भाग्यों का स्वरुप यह तिरुमलगिरि पवित्रतम है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण

- ‘सप्तगिरि’ ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।
- ‘सप्तगिरि’ आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।
- ‘सप्तगिरि’ पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।
- ‘सप्तगिरि’ पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/-.
- ‘सप्तगिरि’ पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/-.
- ‘सप्तगिरि’ पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/-.
- ‘सप्तगिरि’ पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ (EMO), भारतीय डाकघर (IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।
- ‘सप्तगिरि’ पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में ‘चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति’ के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, ‘प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति’ पते को भेजना चाहिए।
- चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।
- ‘सप्तगिरि’ पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।
- अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।
- अन्य विवरण केलिए ‘‘प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507’’ पते पर संपर्क करें।
- सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 जून-2025 अंक-01

विषयसूची

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर की इतिहास और वैशिष्ट्य	डॉ.पी.बालाजी	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	10
अभयहस्त की मुद्रा में श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी अप्पलायगुंटा	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	13
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	17
तिरुमल भगवान बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक	श्री अवधेष कुमार शर्मा	21
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	23
आचारों में अनेकों अंतरार्थ	श्री वेमुनूरि राजमौलि	26
परमयोगिनी मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा और अष्टांग योग	डॉ.के.एम.भवानी	27
पूरी - जगन्नाथ - रथयात्रा	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	31
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	35
श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	36
दास पितामह श्री श्रीपादराज	डॉ.मैथिली प्र.राव	38
''उँगलियों पर गणना''	डॉ.वड्डी जगदीश	40
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	42
स्ट्राबरी / स्टॉबेरी	डॉ.सुमा जोषि	44
जून महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - गरीब की भेंट	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - श्रीकृष्ण की लीला	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 35		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री गोविंदराजस्वामी, तिरुपति।
चौथा कवर पृष्ठ - उभयदेवेरियों सहित श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी, अप्पलायगुंटा।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण,
M.A., M.Phil., Ph.D.
P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

"योग" - स्वास्थ्य का दिव्य पथ

भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहरों में से एक है "योग"। यह कोई साधारण शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों की साधना से उपजा ऐसा विज्ञान है जो आज समूचे विश्व को स्वास्थ्य, शांति और आत्मशुद्धि की दिशा में मार्गदर्शन कर रहा है।

संस्कृत में "योग" शब्द की उत्पत्ति "युज्" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है - "एकता" या "संपर्क स्थापित करना"। यह शरीर, मन और आत्मा के समन्वय का माध्यम है। योग का वास्तविक उद्देश्य है - इंद्रियों पर नियंत्रण प्राप्त कर, चित्त को परमात्मा में एकाग्र करना। योगशास्त्र के महान प्रवर्तक महर्षि पतंजलि ने अपने योग सूत्रों में स्पष्ट रूप से कहा है - "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" - अर्थात् योग का मूल है मन की चंचल वृत्तियों को नियंत्रित करना।

आज के दौर में जब भागदौड़ और मानसिक अशांति जीवन का हिस्सा बन चुकी है, योग एक अमूल्य औषधि की तरह सामने आया है। प्राणायाम, ध्यान और आसनों के माध्यम से योग न केवल तन को स्वस्थ रखता है, बल्कि मन में संतुलन और स्थिरता भी लाता है।

योग केवल अभ्यास नहीं, बल्कि एक सम्पूर्ण जीवनपद्धति है। यही कारण है कि तिरुमल तिरुपति देवस्थानम जैसे प्रतिष्ठान भी योगविज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। "योगसर्वस्वम्" तथा मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा कृत "अष्टांग योगसारम्" जैसे ग्रंथों के माध्यम से श्रद्धालु पाठकों को योग के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराया गया है।

विश्व को योग की शक्ति से परिचित कराने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल हुई 2015 में, जब पहली बार 21 जून को "अंतराष्ट्रीय योग दिवास" मनाया गया। इस पहल ने योग को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया और स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन तथा वैश्विक सौहार्द्र के लिए एक साझा संकल्प का रूप ले लिया।

योग आत्मा की शुद्धि और जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर एक यात्रा है। "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु" - इस सार्वभौमिक प्रार्थना को साकार करने का मार्ग है योग। इस योग दिवस के अवसर पर हम सभी को चाहिए कि हम अपनी दिनचर्या में थोड़े समय के लिए ही सही, योग को स्थान दें - ताकि तन स्वस्थ रहे और मन निर्मल। यही नहीं, इस माह में वैष्णव भक्तों में अग्रगण्य नम्माल्वार और पेरियाल्वार जैसे बारह आल्वारों के उत्सव भी बड़े श्रद्धा से मनाए जाते हैं - जो हमें हमारी भक्ति परंपरा से जोड़ते हैं।

इस पवित्र ज्येष्ठ माह में भगवान श्री वेंकटेश्वर के लिए वार्षिक ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव सम्पन्न होता है। शास्त्रीय परंपरा के अनुसार शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी से पूर्णिमा तक श्रीवैखानस विधि से यह उत्सव मनाया जाता है। इस विशेष अवसर पर श्रीनिवास भगवान के दिव्य दर्शन से श्रद्धालु अनुपम आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इसी मास में ओडिशा के पुरी क्षेत्र में भगवान जगन्नाथ की प्रसिद्ध रथयात्रा भी होती है - जो समरसता और सामाजिक समग्रता की प्रतीक है। इसलिए ही कहा गया है - "सर्वं जगन्नाथमयं"। उनके स्मरण से ही मोक्ष का द्वार खुलता है।

ॐ नमो वेंकटेशाय।

श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर की इतिहास और वैशिष्ट्य

- डॉ.पी.बालाजी

तिरुपति तिरुमल में अनेक पवित्र मंदिर हैं। इन मंदिरों में गोविंदराजस्वामी के मंदिर एक है। इस मंदिर तिरुपति रेल्वे स्टेशन के पास है। भगवान श्री गोविंदराजस्वामी स्वयं भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी के बडे भाई थे। उनके मंदिर तिरुपति क्षेत्र में निहित हैं। इस मंदिर का प्रबंधन तिरुमल तिरुपति देवस्थानम द्वारा किया जाता है।

मंदिर की वैशिष्ट्य

मंदिर में दो गोपुर हैं। गोपुरम के ऊपर रामायण और भागवत की कहानियों को दर्शाती मूर्तियों से सुसज्जित है। भगवान गोविंदराजस्वामी की मूर्ति को प्राचीन देवी आदिशेष के ऊपर लेटे हुए दर्शाया गया है। भगवान गोविंदराजस्वामी को उत्तर दिशा की ओर पैर, दक्षिण दिशा की ओर सिर, चतुर्भुज, शंख और चक्र से विराजमान हैं। नाभि में ब्रह्म तथा सिर पर मुकुट और दिव्य आभूषण पहने हुए दर्शाया गया है। मूलविराट गोविंदराजस्वामी के साथ, आंडाल अम्मवारु, श्रीकृष्ण, श्री रामानुज, तिरुमंगैआल्वार, श्री वेदांत देशिक, श्री लक्ष्मी और श्री मनवाला महामुनि की भी उपस्थिति है। उत्तर दिशा की ओर स्थित मंदिर में अनंत भी विष्णु के रूप में भगवान गोविंदराजस्वामी मंदिर में निहित हैं। मंदिर के दक्षिणी भाग में रुक्मिणी और सत्यभामा के साथ पार्थसारधि मंदिर है। श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव वैशाख माह में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। मंदिर के सामने एक बड़ा(कोनेरु) पुष्करिणी है। मंदिर के समीप ति.ति.दे. का ''मंदिर वास्तुकला के संग्रहालय'' है। इसकी विशेषता यह है कि यहाँ की मूलमूर्ति पर तेल से अभिषेक नहीं किया जाता, क्योंकि वह मिट्टी से बनी है। तिरुमल के वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर की तरह, गोविंदराजस्वामी मंदिर भी वैखानस आगम प्रथाओं का पालन करता है।

इतिहास

मंदिर में लगे कई शिलालेख ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। सबसे पुराने शिलालेख के अनुसार, राजराजा चोल तृतीय 1235 में इस क्षेत्र पर शासन कर रहे थे। 1239 में, वीर नरसिंह यादव राय की पत्नी ने मंदिर के रथ और कुछ अन्य मरम्मत के लिए दान दिया था। यह मंदिर 1506 में विजयनगर के राजाओं के शाल्व वंश के दौरान फला-फूला।

श्री रामानुज के शासनकाल के अनुसार मंदिर के सभी वैष्णव पुजारी अपने जीवन के भय से पूरे राज्य में भाग गए। कुछ पुजारी भगवान की अनुष्ठानिक मूर्तियाँ लेकर तिरुमल क्षेत्र में रामानुजाचार्य से मिले। यह जानकर रामानुजाचार्य बहुत दुःखी हुए और उन्होंने चिदंबरम से गोविंदराजस्वामी की प्रतिमा की प्रतिकृति बनवाई और उसे तिरुपति में स्थापित किया। यह सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्था की गई कि पूजा और दैनिक पूजाएँ संपन्न हों, जिसमें चिदंबरम से लाई गई मूर्ति भी शामिल थी। उन्होंने अपने शिष्य यादव राजा को मौजूदा तालाब के बगल में मंदिर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। मंदिर के निर्माण के बाद, राजा ने मंदिर के चारों ओर एक अग्रहार बनवाया और अपने गुरु रामानुजाचार्य के नाम पर इसका नाम रामानुजपुरम रखा। यहाँ तक कि 1830 के दशक तक भी मंदिर आचार्यपुरुषों के नियंत्रण में था। हालाँकि, सरकार मंदिर की देखरेख करती थी।

एक कहानी के अनुसार : चिदंबरम से भगवान गोविंदराजस्वामी की मूर्ति 24-2-1130 को लाकर इस मंदिर में स्थापित की गई थी। इस मंदिर के परिसर में श्री आंडाल की मूर्ति भी स्थापित की गई थी। पार्थसारधि की मूर्ति, गोविंदराजस्वामी की मूर्ति के आने से पहले से ही वहाँ मौजूद थी। इसके उत्तरी दिशा में भगवान गोविंदराजस्वामी की प्रतिमा स्थापित की गई। भगवान गोविंदराजस्वामी की मूर्ति, जो चिदंबरम में एक औपचारिक मूर्ति थी, यहाँ एक पवित्र स्थान बन गई है। वरदराजस्वामी की मूर्ति, जो तब तक मूलमूर्ति थी, एक औपचारिक मूर्ति बन गयी।

ऐसा कहा जाता है कि काशी के एक निःसंतान राजा अपने परिवार के साथ श्रीनिवास की सेवा करने तथा संतान प्राप्ति के लिए भिक्षा मांगने तिरुमल आये थे। ऐसा कहा जाता है कि काशी के राजा और उनकी पत्नी भगवान के दर्शन के लिए आये और भक्तिभाव से

उनकी सेवा की। प्रभु को प्रसन्न करने के लिए मैं रानी के स्वप्न में प्रकट होकर तुम्हें संतान का आशीर्वाद दूंगा। उसने कहा, ''अपनी नाक पर जो नथनी है, वह मुझे दे दो।'' इस पर उसने अपने पति से कहा, ''मैं अपने पति की आज्ञा का पालन करुंगी'' अगर मेरे पति इसकी इजाजत दें तो मैं इसे उन्हें दे दूँगी। भगवान ने उत्तर दिया, ''यदि ऐसा है तो मैं अपने भाई गोविंदराज के आधीन हूँ - यदि वह मुझे आपको संतान देने की अनुमति देंगे तभी मैं आपको संतान दूंगा'' इसके अलावा, यह भी कहा गया है कि यह किसी अन्य तरीके से नहीं किया जा सकता। इस कारण से, भक्तगण भगवान गोविंदराजस्वामी को भगवान वेंकटेश्वर का बड़ा भाई मानते हैं, जो तिरुमल में विराजमान हैं।

गोविंदराजस्वामी मंदिर का गोपुरम बहुत बडा है। इस मंदिर के सामने एक हनुमान मंदिर

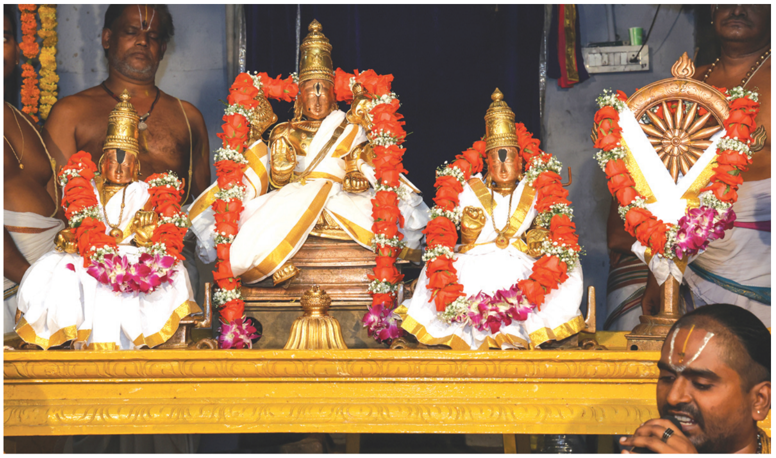

है। इस हनुमान मंदिर के पीछे पुष्करिणी है। गोविंदराजस्वामी के मंदिर में साल भर में दैनिक, साप्ताहिक, माहिक और वार्षिक उत्सव, पूजा-अर्चना, कैंकर्य आगम रीति के अनुसार संपन्न करते हैं।

स्वामीजी को संपन्न करने वाले पूजा कैंकर्यों में ब्रह्मोत्सव ही अत्यंत प्रसिद्ध है। पुष्पयाग महोत्सव, पवित्रोत्सव, ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव, प्लवोत्सव (नौका विहार) जैसा उत्सवों को समय के अनुसार आयोजित करते हैं।

क्षीरसागर में विराजित भगवान विष्णुजी की शयन भंगिमा में यहाँ पर भगवान की मूर्ति को संदर्शन कर सकते हैं।

तिरुमल श्रीनिवास और तिरुपति गोविंदराजस्वामी दोनों ही भगवान विष्णु के रूप हैं, लेकिन भक्त गोविंदराजस्वामी को श्रीनिवास का बड़ा भाई मानते हैं। भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए तिरुपति जाने वाले कुछ भक्त पहाड़ी पर चढ़ जाते थे, जहाँ वे भगवान गोविंदराजस्वामी के दर्शन कर सकते थे। कुछ भक्त जो पहाड़ी पर चढ़ने में असमर्थ थे, उन्होंने गोविंदराजस्वामी के दर्शन किए और फिर वापस लौट गए।

इस प्रकार श्री गोविंदराजस्वामी एक पवित्र पावन मूर्ति है। तिरुपति में स्थित इस भगवान को दर्शन करना, अर्चन करना और स्तुति करने से ही आपको जन्म जन्मांतर पाप को भी हटाकर पुण्यफल देते है। इस पवित्र पुण्य मंदिर को इस पावन मूर्ति को दर्शन करने से सर्व संपन्न फल मिल जाएगा।

ॐ नमो वेंकटेशाय।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

पाशुरम 9 तो भगवान के विभिन्न रूप को तरह-तरह के वर्णन करता है। आल्वार इस भगवान को बाणासुर के एक हजार हाथों को काटनेवाले सुदर्शन चक्रधारी कहते हैं। ये वेद विदित वेंगडम् पर वास करते हैं। ये ''नान् - कै - शेम् - पोन् - शेयु'' के प्रख्यात मंदिर दक्षिण में प्रसिद्ध प्राप्त मंदिर है जहाँ विद्वान, ज्ञानी रहते हैं (तीसरा तिरुमोलि, चौथा दशक, 8वाँ पाशुरम)। ये भगवान को अपनी सोच के प्रेरक, मार्गदर्शी, श्रीलक्ष्मी नाथ और वेंगडम् के अधिनाथ कहते हैं। इन्हें अपने मन के वासी भी बताते हैं एवं त्रिविक्रम घोषित करते हैं। परमात्मा और श्रीरंगधामवासी भी बताते हैं। (6 तिरुमोलि के 5वें दशक के 7वाँ पाशुरम)। ये भगवान को तिरुवेंगडम् पर रहनेवालों के लिए दिव्य ज्योति हैं। तिरुनानगूर वासियों के लिए वेदिक मूर्ति हैं। तिरुवेल्लककुल वासियों के लिए पाप नाशक हैं। (7वें तिरुमोलि के चौथे दशक का 5वाँ पाशुरम)। तीसरे तिरुमोलि के पाँचवें दशक के चौथे पाशुरम में तिरुवेल्लारै के निवासी के रूप में भगवान का वर्णन करते हैं जो आपके बगीचों और कटहल के वनों के बीच हैं। महाभारत युद्ध में शत्रुओं के संहारक भगवान भी ये ही हैं जिन्होंने पाँचों पाँडवों की सहायता की है। ये ही कृष्ण तिरुवेंगडम् पहाडों पर रहते हैं। भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। 1-6-8 में वे स्वीकार करते हैं कि उन्होंने भगवान की खोज की और पाया भी। वे एक ब्रह्मचारी के रूप में मृगचर्म पहने हुए मिले। ये ही बली से पृथ्वी को दान में पानेवाले वामन थे। ये ही तिरुवेंगडम् वासी भगवान श्री वेंकटेश्वर हैं। 5-7-3 तिरुमोलि में वे घोषित करते हैं कि तिरुनारैयूर के भगवान के अलावा और कोई देव उनके मस्तिष्क में स्थान नहीं पा सकता। ये अपनी शरण में आये भक्तों को निर्भय होने का आश्वासन देते हैं। रक्षा करते हैं और उन्हें स्वर्ग का आभरण बनाते हैं। बाल कृष्ण के रूप में आपने हयासुर का वध किया। ये गन्ने के रस समान मीठे और शहद समान मधुर हैं। तिरुमोलि के 3-7-10 में वे बताते हैं कि उन्होंने ढूँढकर उन्हें पहचाना और उसी भगवान की आराधना की, क्षीराभिषेकम् भी किया। ये उस परमेश्वर से ऐक्य होना चाहते हैं, जो हिमवंत की पुत्री पार्वती के पति हैं। ये सूर्य भगवान की आत्मा हैं। वेंगडम् के अमूल्य मणि हैं। दिन और रात के सृजक भी हैं। तिरुमोलि के 2-10-1 में आल्वार कहते हैं कि वे और उनके सहयोगी सबने वेंगडम् के भगवान को देखा और उनकी ओर आकर्षित भी हुए। ये महान और महत्वपूर्ण हैं। सुवर्ण के समान आकर्षक हैं। सुअंग और सुनिश्चित संकेतों से युक्त देव हैं,

तथा बिजली से अधिक प्रकाश फैलाने वाले हैं। ऐसे भगवान ने आल्वार को अपने सेवक के रूप में स्वीकार किया है। तिरुत्तनकोविल में आराधना करने का अवसर प्रदान किया। तिरुमोलि के 4-9-7 में वे अपने मन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि ''हे मन! तुम अगर सुंदर देव वनिताओं की सोच से मुक्त होकर सही ढंग से रहना और सही मार्ग पर चलना चाहते हो तो परमात्मा का नामस्मरण करो। ये वेंगडम् पर वास करते हैं। सागर समान विशाल हृदयी हैं। साथ-साथ तिरुवेल्लवाल का भी नामस्मरण करो।

तीन और पाशुरों में आल्वार स्त्री बन जाते हैं। उस नारी की माता बनकर (स्त्री बने आल्वार से) कहती है- मेरी पुत्री! बिना किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव किये 'वेंगडम् वेंगडम्' नामस्मरण करती है। वह मेरी गोद में लेटती नहीं है। हमेशा आँखें खोलकर रखती हैं। नींद को भूल ही गयी है। मैं अपनी पुत्री की व्यथा कैसे व्यक्त कर सकती हूँ? यह व्यथा तो भगवान श्री वेंकटेश्वर से विरह की व्यथा है। तिरुमोलि के 1-5-5 में तो भगवान के विरह में विरहिणी नारी (आल्वार) भगवान का कुशल-क्षेम समाचार पूछती है। विरह में पसीना-पसीना हो जाती है। बेहोश होती है। मूर्छित स्थिति में उसका मस्तिष्क चकरा जाता है, पागल होती है। क्या वह ऐसी स्थिति से मुक्त हो सक्ती है? (यह माता की मानसिक वेदना है।) तिरुमोलि 3-8-2 में वे शंका व्यक्त करती हैं कि क्या मेरी सुंदर पुत्री नारायण को पा सकेगी? दिव्य गुण संपन्न शंख-चक्रधारी अपनी बली भुजाओं से उन्हें तारेंगे? पवित्र यज्ञोपवीतधारी वेंगडम् के अधिदेव जो शिलंबु पायल से सुअलंकृत हैं, और जो तिरुमालिरुंशोलै पहाड़ पर विराजमान हैं, और वेद वर्णित भगवान स्वीकार करेंगे?

तिरुप्पाणाल्वार अपनी भक्ति भावना से ओतप्रोत होकर श्री वेंकटेश्वर के सामने कामिनी के रूप में प्रस्तुत होते हैं और अपनी हरे वर्ण की तोती से भगवान से कुछ बताने के लिए कहती है। वह जाकर उनसे कहे कि भयंकर सुदर्शन चक्रधारी तुरंत उनके पास आयें (तिरुमोलि 5-10-10)। वे आगे कहते हैं (नारी प्रेमिका के रूप में मानकर) कि ''कृष्ण तो मेरे मन में रहते हैं, परन्तु किसी वजह से मेरे हाथ की चूडियाँ हाथों से गिरती जा रही हैं। (विरह से हाथ सूख गये हैं)। स्त्रियों का जन्म पाने के साथ-साथ हम उनके कुछ महत्वपूर्ण गुणों और विशिष्टताओं को भी प्राप्त करती हैं। उन्हें वैसे ही रहने दीजिए। हम कुछ निरोधकों को भी उसके साथ-साथ उत्तराधिकारवत पाती हैं। प्रसिध्द वेंगडम् पहाड के सर्वोन्नत भगवान की प्रशंसा गाना भी इसी का परिणाम है। उसी प्रकार श्रीरंगम के अधिनाथ का गायन भी।'' तिरुमोलि 7-11-3 में अपने ऊपर इच्छा से लिए महिला आल्वार के भाव से संपन्न होकर अपनी सखी द्वारा छोडे वचनों के प्रत्युत्तर में आल्वार कहते हैं- ''वे कहती हैं कि उन्होंने महाबलि से तीन फुट जमीन माँगी है, लेकिन उन तीन फुट से तीनों लोकों को नचाया है। वे क्षीरसागर पर सोते हैं और वेंगडम् पर रहते हैं।'' बाद में कहते हैं ''हे सखी! वे क्षीरसागर पर शयन करते हैं और वेंगडम् पर भी रहते हैं लेकिन हृदय में तो स्थायी रूप से रहते हैं, ये ही कलिकंड्र हैं (कलियन तिरुमंगैयाल्वार हैं''10-11-5 तिरुमोलि)।

अपने तिरुक्कुरुंदांडकम् के 7वें पाशुरम में तिरुमंगैयाल्वार कहते हैं कि जो पवित्र मन से भगवान की महानता को पहचानने का प्रयत्न करते हैं वे समझते हैं कि भौतिक और स्वार्गिक विभूतियों को भक्तों को प्रदान करनेवाले भगवान श्रीरंगम् और तिरुमलै दोनों स्थानों में लाल और नीले वर्ण के फूलों के उद्यानों में (जो युगानुरूप) रहते हैं।

(इसी संदर्भ में हम दूसरी बार तिरुमलै शब्द का प्रयोग पाते हैं। वैसे वेंगडम् शब्द ही अधिक प्रयुक्त है आल्वारों से। पहली बार हम पूदत्त आल्वार के 63 पाशुरम में इस शब्द का प्रयोग पाते हैं।)

'तिरुनेडुनडानडकम्' के 8वें पाशुरम में आल्वार सूचित करते हैं कि ''मैं पेरुमाल के पाद युगल की आराधना में लीन रहना चाहता हूँ जो तिरुनूरकम् में रहते हैं, जो वेंगडम् पर रहते हैं, जो तिरुनीलात्तिंगल्तुंड पेरुमाल (कांची) में रहते हैं, जो वेंका में भी रहते हैं, जो भक्तों के मनों में रहते हैं, जो तिरुक्कारकम् में रहते हैं, जो तिरुक्कार्‌वानम् में रहते हैं और तिरुप्पेर शहर में रहते हैं। वे भगवान जो माखन चोर हैं मेरे मन में बसते हैं।'' पाशुरम 9 में वे आगे बढ़कर कहते हैं कि ''मेरे भगवान तिरुक्कडलमलै में रहते हैं। वहाँ के सागर के तट पर जहाज़ अनेक मणि-मानिक ला देते हैं। वे तिरुवेग्ग (कांची) में उच्च प्राकारों के बीच रहते हैं। तिरुप्पेर नगर में रहते हैं। उनके दक्षिण पार्श्व में शिव-पार्वती रहते हैं। ये वही भगवान हैं जो क्षीरसागर पर सोते हैं। ये वे ही हैं जो विभिन्न अवतार लेकर पृथ्वी पर आये हैं। ये वे ही हैं जो वेंगडम् पर खडे हैं। हे भगवान! आप कहाँ है? आपके गरीब भक्त और सेवक आपको ढूँढ रहा है। ढूँढते ढूँढते थक गया है। जल्दी मिलो!'' पाशुरम 10 में मन की विकलता को जोडकर आल्वार कहते हैं कि ''मैं आपका सेवक हूँ, मैं नादान हूँ। मुझे सही ढ़ंग से समझाया नहीं गया है। मैं जानता भी कुछ नहीं। मैं आपको कैसे पुकारूँ, यह भी नहीं जानता। आप तो मस्त हाथी सम ख्यात तिरुमालिरुनशोलै पर्वत पर दक्षिण में रह रहे हैं, आप बली हाथी के समान उत्तर के वेंगडम् पर हैं, पश्चिम के श्रीरंगम् में दृढ़ हाथी के समान सो रहे हैं, उन्मत्त गज सम तिरुक्कन्नपुरम् में (पूर्व में) स्थित हैं। आप देवतागण बीच राजकुमार हैं। अपने समस्त अवतारों के बाद प्रधान देव बनकर रह रहे हैं। आपने ही सातों लोकों की रक्षा की है।'' पाशुरम 16 में तिरुमंगैयाल्वार अपने को प्रेम में पागल एक युवती मानते हैं। लेकिन भगवान ने स्वीकारा नहीं। इसी कारण वे अपनी माता द्वारा कहला हैं कि ''हे गोपाल गायों को चरानेवाले युवक हैं आप! रासलीला से आनंद लेते हैं, वेंगडम् पर रहते हैं। मेरी लाडली आपके लिए रोती है, आँसू बहाती रहती है, बेहोश होती है। उसे स्वीकार कीजिए।''

श्री वेदान्तदेशिक

आल्वार भक्तों के साथ-साथ वैष्णव आचार्य श्रीमत् वेंकटनाथ ने भी संस्कृत में पद लिखे हैं। इन्हीं को वेदान्तदेशिक भी कहते हैं। इन की कृति है- ''दया शतकम्''। श्री वेंकटेश्वर भगवान की भक्ति से युक्त रचना है यह।

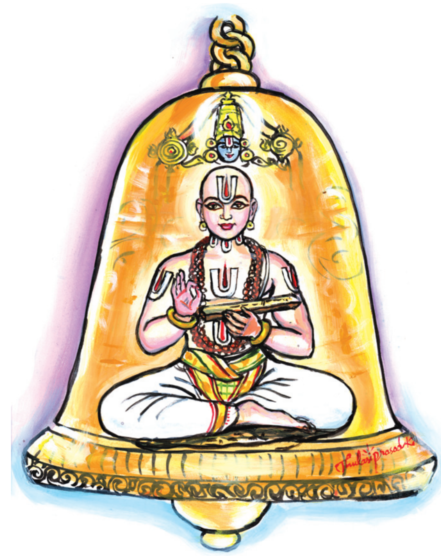

आपने कुछ और धार्मिक ग्रंथों की भी रचना की है। उनमें ''अधिकार संग्रहम्'' एक है। इसके 43 पाशुरों में आप वेंगडम् की प्रशंसा करते हैं। इनका जन्म सन् 1268 में कांचीपुरम् में हुआ था। ये शतवर्ष जीवी हैं। एक सौ साल जिये हैं। वे कहते हैं कि वेंगडम् पहाड श्रीकृष्ण के पदयुग्म को दर्शाता है। भगवान के पदकमल भक्तों के अच्छे और बुरे कर्मों पर ध्यान नहीं देते। बस उनके पापों को धो देते हैं। पुण्यों के अनुसार फल प्रदान करते हैं। अन्त में स्वर्ग भी प्रदान करते हैं। यही तो सब चाहते हैं। वेंगडम् तो वेदों का मूर्त संकेत है। वेदों की प्रतिमूर्ति ही है।

''दया शतकम्'' की भावनाएँ 108 श्लोकों में व्यक्त की गयी हैं। सब भगवान श्री वेंकटेश्वर की स्तुति में प्रस्तुत हैं। इनमें एक स्वर है- ''भक्तों पर दया बरसाइए! उन पर कृपा कीजिए। सब को परम पवित्र बनाइए! हे कलियुग देव श्री वेंकटेश्वर''।

क्रमशः

अप्पलायगुंटा नामक स्थान तिरुपति से 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ के श्री वेंकटेश्वरस्वामी मंदिर का अत्यधिक महत्व है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने तिरुमल की अपनी यात्रा के दौरान इसी स्थान पर विश्राम किया था। ऐसा माना जाता है कि भगवान श्रीनिवास यहाँ अर्चामूर्ति के रूप में विराजमान है।

मंदिर का इतिहास

भगवान वेंकटेश्वर स्वामी नारायणवन में आकाश राज की पुत्री पद्मावती देवी से विवाह करने के बाद तिरुमल की यात्रा पर निकलते है। इस प्रकार भगवान ने तपस्या में ध्यानमग्न ऋषि सिद्ध को अपने पवित्र हाथों से आशीर्वाद दिया और इस मंदिर में अर्चामूर्ति के रूप में बसे। यहाँ की विशेषता यह है कि श्रीनिवास भगवान अभयहस्त से आशीर्वाद देते हुए दर्शन देते है। इस स्थान की किंवदंती कहती है कि इसके बाद उन्होंने पैदल ही तोंडवाडा में रहे अगस्त्येश्वर मुनि के दर्शन किए और निकटवर्ती श्रीनिवासमंगापुरम् में छह महीने तक रहे तथा फिर कदम का रास्ता 'श्रीवारि मेट्टु के मार्ग' से तिरुमल को पहुँचे।

अभयहस्त की मुद्रा में श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी अप्पलायगुंटा

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

मंदिर की विशेषताएँ

इस मंदिर के दक्षिण में एक ऊँची पहाड स्थित है और चारो ओर फसलों से घिरा हुआ है, इसलिए यहाँ का वातावरण बहुत शांतिपूर्ण है। मंदिर के मुख्य द्वार से गुजरते ही एक ध्वजस्तंभ है और उसके पीछे अंतराल है। गर्भगृह में भगवान श्रीनिवास का स्वरूप विराजमान है। यह रूप आँखों के लिए दिव्य मंगल रूप है। श्रीनिवास मंदिर के सामने एक छोटे झील है। उसके सामने प्रधान आलय के सामने छोटे हनुमान जी का मंदिर है।

हनुमानजी का मंदिर

यहाँ भगवान हनुमान को बहुत ही महिमावान मूर्ति के रूप में वर्णित किया गया है। भक्तगण इधर के हनुमान पर ज्यादा विश्वास रखते है। इधर के हनुमान पुरानी बीमारियों को रोकने में काबिल है। जो लोग अपनी बीमारियों से ठीक हो जाते हैं, वे मंदिर में आकर प्रसाद चढाते हैं और मन्नतें मांगते हैं।

मंदिर में पूजा और अभिषेक

अप्पलायगुंटा में स्थित श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर में प्रत्येक शुक्रवार को आयोजित होनेवाला अभिषेक बहुत प्रसिद्ध है। अभिषेक के दिन, शनिवार और छुट्टियों के दिन लोग भगवान का आशीर्वाद लेने के लिए यहाँ आते हैं। वे मंदिर के सामने स्थित भगवान हनुमान को शुभ उपकरणों के साथ मंगल वाद्य यंत्रों के साथ पूजा और अभिषेक करते हैं और भक्तों के लिए दर्शन का

अवसर दिया जाता है। श्रद्धालु बहुत कम संख्या में इधर आते हैं। तिरुपति के लोग प्रसन्न वेंकटेश्वर की महिमा को अच्छी तरह से जानते है। इसलिए वे अक्सर इधर आते रहते हैं। इधर का माहौल शांतिपूर्ण रहता है। इसलिए श्रद्धालुगण भगवान को सच्चे और ध्यानपूर्वक दर्शन कर सकते हैं। इस देवालय में श्री आंडाल, श्री पद्मावती माताजी और हनुमान की मूर्तियाँ भी है।

स्थलपुराण की विशेषताएँ

तिरुमल तिरुपति देवस्थान द्वारा प्रबंधित मंदिरों में, ''अप्पलायगुंटा'' में स्थित ''श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर'' अत्यंत प्रसिद्ध है। यह तो बहुत पुराना मंदिर है। यहाँ भगवान वेंकटेश्वर स्वामी, जो मंदिर में अर्चामूर्ति के रूप में विराजमान है, एक सुखद मुद्रा में है, जैसे कि उन्होंने अपने हाथ उठाकर भक्तों को आशीर्वाद दिया हो। इसलिए भक्तों के बीच ''प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी'' के नाम से प्रसिद्ध हैं। तिरुचानूर और श्रीनिवासमंगापुरम् जैसे स्थानों से संबंधित कहानियाँ और स्थल पुराणों में मिलते हैं। लेकिन इस ''अप्पलायगुंटा'' से संबंधित कहानियाँ और किंवदंतियाँ पुराणों में नहीं मिलती है। जनसाधारण के बीच प्रचलित कहानियाँ और लोक कथाएँ, सारंगपाणि के शब्द, ताल्लपाका चिनतिरुमलाचार्य के भजन और कुछ ऐतिहासिक शिलालेख इस स्थलपुराण की विशेषताओं को प्रकट करते हैं।

'अप्पलय्या गुंटा' नाम के पीछे का इतिहास

प्राचीनकाल में एक भक्त वेंकटेश्वर की पूजा करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए तीर्थ यात्रा पर निकला था उनके भगवान सात पहाडियों पर स्थित तिरुमल मंदिर में निवास करते हैं। रास्ते में इस स्थान पर भगवान प्रसन्न वेंकटेश्वर की पूजा की और पास के एक पेड़ की छाया में आराम करने के लिए कुछ देर लेट गया। बाद में वह उठकर तिरुमल की ओर चल पडा।

लेकिन वह तिरुमल भगवान को अपनी मन्नते पूरी करने के लिए चढ़ानेवाले चढ़ावों के बंडल को भूल गए। उसे प्रसन्न वेंकटेश्वर मंदिर के पास पेड के नीचे छोड दिया, जहाँ वह सोचा था। तिरुमल की ओर जाते समय उसे अचानक चढ़ावों के बंडल की याद आगई! वह तुरंत पीछे मुडा। श्रीनिवास भगवान का स्मरण करते हुए चिंता के साथ इस स्थान पर लौट आया। उस स्थान पर पहुँचने पर पेड के नीचे चढ़ाओं की पोटली ज्यो की त्यो पाई गई। वह भक्त इसे भगवान वेंकटेश्वर का आशीर्वाद माना और भक्तिपूर्वक उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने अपने पैसे से यह कुआ खुद्वाया ताकि मंदिर में आनेवाले श्रद्धलुओं और स्थानीय लोगों को पानी को कोई समस्या न हो। संस्कृत में 'अप' का अर्थ जल होता है। ऋण पानी की तरह है। खाई खोदनेवाली भक्त का नाम भी 'अप्पुलय्या' था। तब से वह 'अप्पुलय्या' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि उसने कर्ज, यानी पानी की कमी को पूरा किया था। उस भक्त के नाम पर इसका नाम रखा गया और समय के साथ लोग यह 'अप्पुलय्या गुंटा' को कालांतर में 'अप्पलायगुंटा' के नाम से पुकारने लगे।

एक अन्य कहानी भी प्रसारित हो रही है। इस गड्ढे को खोदने के दौरान काम करनेवाले स्थानीय मजदूरों को बिना किसी दैनिक ऋण के उनकी मजदूरी का भुगतान किया गया। कुछ लोग तो यह भी दावा करते है कि यह उस समय ऋण-मुक्त भुगतान के लिए खोदा गया गड्ढा था, तथा इसे ''ऋण-मुक्त गड्ढा'' माना जाता था, तथा समय के साथ यह 'अप्पलायगुंटा' बन गया।

सिद्धुलय्या कोंडा - योगुला कोंडा

कोंडा तेलुगु का शब्द है। इसे हिन्दी में पहाड़ कहते हैं। प्राचीन समय में 'सिद्धुलय्या' नामक एक योगी इस मंदिर के पास एक पहाडी पर तपस्या करते थे, जहाँ भगवान वेंकटेश्वर का निवास है। कुछ समय के बाद योगी की तपस्या फलित हुई और भगवान वेंकटेश्वर प्रसन्न होकर उसके सामने प्रकट हुए और भक्तों की दुनिया को हमेशा के लिए आशीर्वाद देते रहे।

श्रीनिवास ने नारायणवन में देवी पद्मावती से भव्य तरीके से विवाह किया और उसके बाद अगस्त्य महर्षि आश्रम और श्रीनिवासमंगापुरम् क्षेत्रों की ओर जाते समय मार्ग में वे यहाँ रुके। यह जानकर पताकर लिया कि भगवान वेंकटेश्वर पद्मावती के साथ यहाँ आएँ हैं, पास की पहाडी पर तपस्या कर रहे योगियों ने भगवान की सेवा करने आए। श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने आए हुए सभी योगियों की ओर प्रसन्नता, करुणा और दया की दृष्टि से देखते हुए अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। सभी योगियों ने भगवान की स्तुति 'प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी' के रूप में की और आनंदित हुए। इस प्रकार महान्वित होकर भगवान यहाँ सुखदायक मुद्रा में अर्चामूर्ति के रूप में सदा चमकते रहे।

मंदिर के निर्माण संबंधी विवरण

श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर का निर्माण सन् 1232 ई. में कार्वेटीनगर के राजा श्री वेंकट पेरुमाल राजा ब्रह्मदेव करवाए थे। इसे एक पुराना मंदिर माना जाता है।

जो तिरुपति जिले के वडमालपेट मंडल के अंतर्गत आता है। तिरुचानूर मंदिर से श्री प्रसन्न

वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर 12 किलोमीटर की दूरी पर अप्पलायगुंटा गाँव में स्थित है। यह मंदिर भगवान वेंकटेश्वर को समर्पित है, जिन्हें प्रसन्न वेंकटेश्वर के नाम से जाना जाता है। पिछले देवता खडे है और पूर्व की ओर इशारा कर रहे हैं और अन्य सामान्य वेंकटेश्वर मंदिरों के विपरीत भगवान उनका दाहिना हाथ अभय मुद्रा में और बाया हाथ कटि मुद्रा में है।

मंदिर के कैंकर्यों में कार्वेटिनगर के राजाओं का योगदान

कार्वेटिनगर के स्वामी पद्मावती देवी के पिता आकाशराज के रिश्तेदार थे। कुछ कानूनी साक्ष बताते है कि इन राजाओं के शासन काल के दौरान अप्पलायगुंटा मंदिर बहुत प्रसिद्ध हो गया था। विशेष रूप से 'कटारी सालुव माकराजु वेंकट पेरुमाल्लु देवराजु' जिन्होंने सन् 1750 में कार्वेटिनगर को अपनी राजधानी बनाकर इस क्षेत्र पर शासन किया था, उन्होंने अप्पलायगुंटा में प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का जीर्णोद्धार किया और कई कैंकर्यों का संचालन किया। इस राजा द्वारा किए गए 5 फुट ऊँचे दीप स्तंभों का उपयोग आज भी मंदिर में पूजा के लिए किया जाता है।

सारंगपाणि भजन

सारंगपाणि वे कवि थे, जिन्होंने कार्वेटिनगर के स्वामी कटारि सालुव माकराजु वेंकट पेरुमाल्लु देवराज के दरबार में सुशोभित हुआ था। इस सारंगपाणि ने वेणुगोपाल स्वामी जो कार्वेटिनगर में रहते थे और प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी, जो अप्पलायगुंटा में रहते थे, उन दोनों की प्रशंसा में कई श्रृंगारिक छंदों की रचना की।

टी.टी.डी. के नियंत्रण में प्रसन्न वेंकटेश्वर का मंदिर

अप्पलायगुंटा "प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर" को 23, सितंबर 1988 को आन्ध्रप्रदेश, सरकार के देवादाय धर्मादाय शाखा से तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने अपने नियंत्रण में ले लिया गया। तब से टी.टी.डी. की देखरेख में भक्तों के आनंद के लिए मंदिर नवनीकरण कार्यक्रम, ब्रह्मोत्सव और सेवा कैंकर्य आयोजित किए जा रहे हैं।

प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी की महिमा

श्रीनिवास भगवान की प्रसन्न वेंकटेश्वर इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे अप्पलायगुंटा में अपने हाथ फैलाए हुए दिखाई देते है तथा उनके चेहरे पर मुस्कुराहट प्रसारित होते हुए उभरे। यदि पति-पत्नी के बीच समस्याएँ उत्पन्न हो जाए, या उनके वैवाहिक जीवन में विसंगतियां हो तो भी ऐसे लोग, विशेष रूप से भगवान अप्पलायगुंटा स्वामी की पूजा करते हैं। इस भव्य मंदिर में उत्सव या ब्रह्मोत्सवों के समय बड़ी संख्या में लोग आते हैं और भगवान भेंट चढ़ाते है। भगवान अप्पलायगुंटा के मंदिर के आस-पास कई गाँव है। संबंधित गाँव के लोग भगवान के दर्शन करने और विभिन्न प्रकार की पूजाओं में भाग लेने आते रहते हैं। आस-पास के गाँव के लोग भगवान के दर्शन के लिए न केवल पैदल बल्कि बैल-गाडियों और अन्य वाहनों से भी आते हैं। हाल ही में, तिरुपति से भी कई लोग भगवान के दर्शन करने और विभिन्न प्रकार की सेवाओं में भाग लेने आ रहे हैं। तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के लिए सभी वैदिक कार्यक्रम को अत्यंत भक्ति श्रद्धा से आयोजित करते हैं।

सुप्रभात, तोमाला, अर्चना, बली, शात्तुमोरा जैसी सेवाएँ हर दिन की जाती है। शुक्रवार को देवी पद्मावती और आंडालम्मा का अभिषेक किया जाता है। रविवार को भगवान हनुमान तथा सोमवार को श्री गरुडाल्वार का अभिषेक किया जाता है। श्रवणा नक्षत्र के दिन भगवान के लिए अर्जित कल्याणोत्सव मनाया जाता है।

भक्तगण इस विश्वास के साथ आते हैं कि भगवान के चरणों के दिव्य दर्शन से सभी पाप मिट जाएँगे, अपने मजबूत हाथों से वे भक्तों को संसार सागर से बचाएंगे तथा अपने संरक्षणात्मक हाथों से भक्तों की कठिनाइयों का समाधान करेंगे।

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

पद्मावती से नारद का संभाषण

तब उस वन में अद्भुत ढंग से देवमुनींद्र नारद पहुँच गए। उन्हें देखकर सखियों को चिंता हुई। 'आप कौन हैं' पूछने पर उन से नारद ने इस रूप में कहा। "मैं पराया नहीं हूँ। तुम्हारे राजा के गुरु हूँ।" यह सुन कर सब उठकर गुरु भक्ति से पद्मावती ने नारद को आसन देकर नमस्कार किया। तब नारद ने कहा। "हे वनज लोचना! तुम को विवाहसिद्धि शीघ्र ही होगी।" ऐसा आशीर्वाद दिया। पद्मावती को इससे संतोष हुआ। सलज्ञित होकर बिना कुछ बोले वह रह गयी। इसे देखकर फिर से नारद ने कहा। "हे कन्या! मेरे सामने तुम्हें लज्ञा करने की जरूरत नहीं है।" ऐसा बोलते उसे पास बुलाकर बैठने के लिए कहा। फिर हाथ दिखाने के लिए कहा। तब पद्मावती ने कहा। "हे मुनिवर्य! मेरे पिता बन कर मेरे हाथ को देखिए।" कहते हाथ बढाया। तब नारद ने मंदहास करते हुए पद्मावती के हाथ को पकड कर जोतिष बताते इस रूप में कहा। "तुम्हारे हस्त में महान सुलक्षण रेखाएँ हैं। साफ साफ सुनो री। ठीक ठीक बताऊंगा। स्वस्तिक, पद्म, छत्र, चामर, यव, कुलिश रेखादि अखिल शुभ शुभतर रेखाएँ तुम्हारे हस्त में हैं। तुम्ही देख लो इस रीति में।" कहते रेखाएँ पद्मावती को दिखाकर फिर से इस रूप में कहा। "फूलों के किसलय की तरह मृदु रहनेवाला तुम्हारे वाम हस्त में महान कांतिवान मांगल्य रेखा चमक रही है। हे मीन नयनी! तुम्ही देख लो। इस रेखा के बल से साक्षात नारायण ही तुम्हारा पति होगा। तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होगी। हे पुत्री! तुम लक्ष्मी की तरह संतोष के साथ रहो।" कहते पद्मावती को सुंदर सर्वांग सौंदर्य कलित सारे लक्षणों को बताकर मुनींद्र लौट गए।

उस दिन वेंकटाद्री पर श्रीहरि प्रातःकाल ही अच्छी तरह भोजन करके बडे उत्साह से कनक वर्ण वाले वस्त्र पहन कर, किनारे पर मोतियों से जटित कमर बंध कमर पर बांध कर, बालों को संवार कर, फूलों से सजाकर, श्रेष्ठ वस्त्र से बनी रुमाल पहन कर, सरिगे फूलों जैसी शुभ्र वस्त्र को कंधे पर लटकाकर, भूषणों को पहन कर, चमकती तिरुमणि, तिरुचूर्ण आदि को ललाट पर धारण करके, श्रेष्ठ सुगंध परिमल को शरीर पर लगाकर, चमकने वाले सुवर्ण के यज्ञोपवीत को धारण करके अत्यंत संतोष के साथ, सोने से बनायी गयी चूने की डिबिया, सुपारी और पान को रेशमी वस्त्र में लपेट कर कमर में बांध कर, हाथ में धनु और बाण लेकर आखेट के लिए निकल पडे।

श्रीनिवास का आखेट पर जाना

देव योग से तब उनके समीप एक सुंदर घोडा आकर खडा हो गया। श्रीनिवास उस घोडे पर सवार होकर वन में आखेट करने निकल पडे। सारंग, भल्लूक, चमरी, शरभ, सिंह, शार्दूल, मृग आदि का पीछा करते हुए वे आगे बढे। तब एक हाथी ने श्रीनिवास पर हमला किया। श्रीनिवास ने उस के संहार करने का प्रयत्न किया। तब वह हाथी पर्वत से उतर कर भागने लगा। श्रीनिवास ने उस का पीछा किया। वह एकाध योजना दूरी पर भाग गया। वह पद्मावती जहाँ वन विहार कर रही थी, वहाँ पहुँच गया। पद्मावती के समीप जाकर घींकार करने लगा। हाथी को देखकर पद्मावती के साथ रहनेवाली सखियाँ डर कर वृक्षों की आड में छिप गयीं। वहाँ से एक दूसरे से बात करने लगी।

''हे सखियाँ! देखिए अद्भुत ढंग से मद से मत्त एक हाथी आ गया है। अब हम क्या करे? सर उठाकर उस की तरफ मत देखिए। अपने बीचों बीच पद्मावती को रखकर चारों तरफ घेर कर रहिए। हमें कुछ हो जाए तो कोई बात नहीं। किंतु पद्मावती की रक्षा अवश्य करनी चाहिए।'' कहते वे एक दूसरे की तरफ देखने लगी। तभी एक बडे घोडे को आते देखा। घोडे पर एक पुरुष बैठा दिखाई दिया। घोडा उन के पास आकर खडा हो गया। उसे देख कर सखिया डर गयीं।

तब उस हाथी ने अपना पीछा करते हुए आये श्रीनिवास को देखकर बिना डरे अपने सूंड को ऊपर उठाकर श्रीनिवास को दंड प्रणाम किया। इसे देखकर श्रीनिवास ने उस पर दया करते हुए उस का पीछा करना छोड दिया। हरि के इस रूप में क्षमा करने पर वह हाथी विपुल वन में घुस कर चला गया। तब श्रीनिवास झुरमुट की आड में छिप गये। तब पौधों की आड में से देखनेवाली सखियों ने उस हाथी को तथा घोडे को और उस पर आरूढ पुरुष को अचानक अदृश्य होते देखकर उन में से कुछ ने इस रूप में कहा।

''हे बहने! देखने पर अब यहाँ पर हाथी, घोडा और उस पर बैठा पुरुष दिखाई नहीं पड रहे हैं। यह सब माया के रूप में लग रहा है। यह किसी की महिमा है।'' यह सिर्फ एक झूठ था ऐसा कुछ ने कहा। ''हम भ्रांति में थीं'' कुछ ने कहा। ''शायद हमने सपना देखा।'' कुछ ने कहा। ''थकावट से हमें ऐसा लगा है।'' ऐसा कुछ ने

कहा। ''नहीं नहीं यह कोई विचित्र है।'' कुछ ने कहा। इस रूप में सखियों ने विविध रूप में प्रतिक्रिया व्यक्त की। यह सुन कर पद्मावती ने हँसकर सखियों को पास बुलाया। पहले की तरह पद्मावती अपनी सखियों के साथ शतरंज खेलने लगी।

श्रीनिवास के द्वारा पद्मावती को देखना

श्रृंगार वन में अपनी सखियों के साथ शतरंज खेलनेवाली पद्मावती को श्रीनिवास ने अद्भुत ढंग से देखा। श्रीनिवास ने झाडियों की आड से पद्मावती के रूप लावण्य को तथा विलास रेखाओं को देखा। उन्हें बहुत अच्छा लगा। तब उन्होंने मन में ही इस रूप में सोचा। ''इस तरल लोचना के रूप सौंदर्य को देखने से लगता है कि यह रति से, विमल भारती से और पार्वति से, श्री लक्ष्मी से भी अतिशय सौंदर्यवाली है। यह मुझे देखकर कैसे मोहित होगी।'' ऐसा सोचते हुए पद्मावती के यौवन सौंदर्य को नेत्रपर्व के रूप में देखकर मन में ही उस की प्रशंसा इस रूप में की। ''पाद, जांघ और उरु हाथी के सूंड को भी लज्रित करनेवाले हैं। कटि मध्य, कुच युग्म चक्र मृग कंदूक को हरानेवाले हैं। हस्त, कंठ, हारादि कमल, शंख और चंद्र को हरानेवाले हैं। भासुर अधर, दांत, नासिका बिंब फल, कुंद और तिल पुष्पों की तरह है। इतना सुंदर ललितांगी को पहले कभी नहीं देखा। वह भी इस जंगल में देखा। ब्रह्म ने इस सुंदरी को कैसे सृजन किया?'' कहते पद्मावती की प्रशंसा करते फिर इस रूप में सोचा।

''कान, नेत्र, भ्रू युग्म श्रीकारब्ज पत्र और कंदर्प चाप को जीतनेवाले हैं। मानो इस कांता के रूप को सुवर्ण को पीस कर उस में अमृत रस को

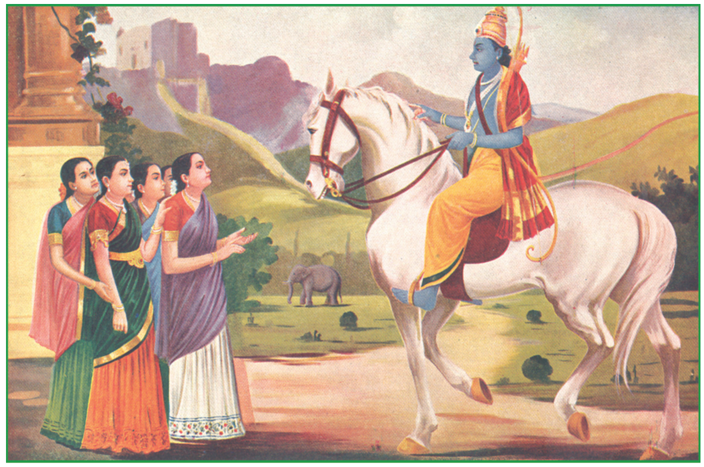

डाल कर अति सुंदर और महाद्भुत रूप में मेरे लिए विधाता ने बनाया है। अगर वह सच नहीं है तो इस प्रकार की शरीर-कांति के साथ अवनि में ऐसी कांता क्यों होगी? शायद संभव नहीं है। बडे तप करने के बाद ही और बहुत पुण्य करने के बाद ही ऐसा रूप इस सुंदरी को प्राप्त हुआ है। कमलासन ब्रह्म ने सर्वकांतिपुंजों के साथ अतुलित सौंदर्यवति को बनाकर पद्म में रखने से, वह आकाश राज को मेरे लिए ही प्राप्त हुई है। इसलिए इस सुंदरी के साथ मैं शीघ्र ही विवाह कर लूंगा।'' इस रूप में श्रीनिवास को पद्मावती पर मोह बढने से पद्मावती के समीप धीरे धीरे जाने लगे। जाते जाते फूलों को तोड कर 'हे सुंदरी! इन फूलों से तुझ पर तलम्ब्रालु (विवाह के समय वधु के सिर पर डाले जाने वाले अक्षत) डालूँगा।' ऐसा इशारा करते हुए फूलों को फेंकने लगे। बहुत आनंद से श्रीनिवास पद्मावती के समीप पहुँच गए।

तब पद्मावती ने श्रीनिवास को देख कर डर कर साडी के सोने की आंचल को गूंगट के रूप में सर पर डाल लिया। फूलों की झाडी में छिप गयी। बिना हिला डुले अपनी सखियों की ओर ताक कर लाडली बोली में इस रूप में कहा। ''हे सखियाँ! बिना किसी हिचकिचाहट के राज कन्या विहार करनेवाली जगह पर इस रूप में पराये पुरुष को नहीं आना चाहिए। भय के साथ जल्दी क्यों करना है? मेरे समीप

मत आइए।'' इस रूप में पद्मावती के बोलते देखकर तब सखियाँ पद्मावती के सामने खडे होकर श्रीनिवास से पद्मावती को छिपाने लगीं। सखियों ने श्रीनिवास की तरफ देखते हुए लज्जित होकर आगे इस रूप में कहा। ''राज कन्या यहाँ पर होते तुम पराये पुरुष यहाँ क्यों आये हो? तुम को कोई भय नहीं है क्या? यहाँ से चले जाओ।'' कहते श्रीनिवास को वहाँ से भगाने की कोशिश की। तब चत्रधर हँसते हुए ''हे मीन लोचना! तुम्हारी राज कन्या से मुझे प्रेम हो गया है। इसलिए बात करने आया हूँ। तुम लोगों से मुझे कोई काम नहीं है। चले जाइए।'' इस रूप में पद्मावती की सखियों को दूर भेजने की कोशिश की श्रीनिवास ने। श्रीनिवास की बातें सुन कर पद्मावती ने अपनी सखियों को पास में बुलाकर कहा। ''बंधु के रूप में तुम को बुलाकर डरा रहा है। यह कौन है? इस के बंधु कौन हैं? इस के कुल गोत्र के बारे में विशद से पता लगा लीजिए।'' पद्मावती ने अपनी सखियों से कहा। तब सखियाँ श्रीनिवास की तरफ पलट कर ''हे शबर! तुम्हारे माता-पिता कौन है? गोत्र और कुल कौन सा है? बताओ'' सखियों के इस रूप में पूछने पर तब श्रीनिवास ने अपने बारे में बताया।

श्रीहरि के द्वारा अपने वृत्तांत को पद्मावती की सखियों को सुनाना

श्रीनिवास ने पद्मावती की सखियों को देखकर इस रूप में कहा। ''हे वारिज लोचन! स्नेह से मैं अपने कुल, गोत्र के बारे में आप को बताऊंगा। राजा की बेटी के साथ मेरे प्रेम को बताने से मैं आप को विशेष उपहार दूंगा।'' ऐसा कहते फिर

से कहा। ''मेरे कुल शीतांश (क्षत्रीय कुल), वशिष्ट गोत्र, पिता वसुदेव, माँ देवकी देवी, बलभद्र मेरा भाई, सुभद्रा देवी मेरी बहन, अर्जुन मेरा साला, धर्मराजादि मेरे बंधु वर्ग है।'' श्रीनिवास के इस जवाब को सुन कर पद्मावती की सखियों ने हँसते हुए कहा 'तुम्हारा शरीर इतना काला क्यों है?' तब श्रीनिवास ने जवाब दिया ''कृष्ण पक्ष को आधी रात के समय माता-पिता से मैं पैदा हो गया। इसलिए मेरा शरीर नीले रंग का हो गया है। इसलिए लोग मुझे कृष्ण कह कर पुकारते हैं। अब मेरे कुल गोत्र के बारे में आप को पता चल गया न इसलिए तुम्हारी कन्या के कुल, गोत्र आदि के बारे में मुझे भी बताइए।'' श्रीनिवास की बातें सुन कर सखियों ने कहा। ''चंद्र वंश का कुल, अत्रि गोत्र के राजा आकाश राज की पुत्री है यह, भूतल में बडी हुई पद्मावती इस का नाम है। बहुत बचपन से हमारे साथ खेलते फूलते बडी हुई है। हमें हमेशा सकल वस्तुओं को देखकर स्नेह के साथ हमारे साथ रहती है। यह सदा हम पर कृपा करती रहती है।'' सखियों की इन बातों को सुन कर श्रीनिवास ने इस रूप में कहा। ''हे अँबुज लोचन! तुम लोगों पर कृपा करनेवाली सुवासिनी के स्नेह प्राप्त करने के लिए मैं आया हूँ। बिना किसी संदेह के मेरे साथ प्रेम करने के लिए अभी अपनी सखि से डटकर कहिए।''

क्रमशः

तिरुमल भगवान बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक

- श्री अवधेष कुमार शर्मा

परिचय :

ज्येष्ठाभिषेकम् श्री वेंकटेश्वर स्वामी (भगवान बालाजी) के तिरुमल स्थित श्री वेंकटेश्वर मन्दिर में प्रतिवर्ष ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा तिथियों में अत्यंत श्रद्धा एवं वैदिक विधानों के अनुसार सम्पन्न होने वाला एक परम महत्वपूर्ण उत्सव है। इसे अभिध्येयाराधना के अन्तर्गत "तीर्थोत्तम" महोत्सव माना गया है।

अभिषेक का उद्धेश्य :

यह अभिषेक भगवान की नित्यसेवा, देहशुद्धि एवं नवोत्कर्ष हेतु किया जाता है। चूँकि भगवान बालाजी का विग्रह शालिग्राम शिला से निर्मित है और उसमें शालिग्राम शिला की जीवनी शक्ति विद्यमान है, अतः यह विशेष अभिषेक अत्यंत विशिष्टता लिए होता है।

ज्येष्ठाभिषेक की अवधि व आयोजन :

तीन दिवसीय उत्सव - त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा (ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष)।

स्थान - यह उत्सव तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में संपन्न करते हैं।

स्वामी के तीन रूपों का अभिषेक -

स्वयम्भू मूर्ति (मूलविग्रह),

उत्सवमूर्ति (मलयप्पस्वामी),

स्नपनमूर्ति (भोगश्रीनिवासमूर्ति)।

अभिषेक प्रक्रिया :

वेदाध्ययन तथा आगम नियमों के अनुसार, यह वैखानसागमीय विधि से सम्पन्न होता है।

प्रमुख क्रम :

पूर्वविधि : यज्ञोपवीत धारणा, पवित्रारोपणम्, पुण्याहवाचनम्।

अभिषेक सामग्री :

पंचामृत - दूध, दही, घृत, मधु, शर्करा।

द्रव्यस्नान - गंधोदक, कुशोदक, पंचगव्य, फलों के रस, सुवर्णकण मिश्रित जल।

पुष्पस्नान, गन्धस्नान, सुगन्धित जलस्नान इत्यादि पुष्पवर्षा और मंगलवादन।

विशेष वेशभूषा :

अभिषेक पश्चात् भगवान को ''कैसरपार वेश'' (स्वर्णाभरणों से युक्त) से सजाया जाता है, जो वर्ष में केवल एक बार इसी अवसर पर होता है।

तात्त्विक महत्वता :

यह अभिषेक देव विग्रह की जीवशक्ति को पुनःजागृत करने का प्रतीक है।

इस ''प्रतिष्ठा-पुनरावृत्ति'' भी कहते हैं।

भगवान की आद्यशक्ति की पुष्टि एवं उनके निरंतर आशीर्वाद के लिए यह अनुष्ठान आवश्यक माना गया है।

ग्रन्थीय प्रमाण :

(क) वैखानस आगम :

वैखानस मुनि रचित वैखानस सूत्र, प्रपञ्चसार तन्त्र एवं विमानार्चन कल्प में ज्येष्ठाभिषेक के विधान का उल्लेख किया गया है।

उद्धरण :

'स्नपनं त्रिदिनं कार्यं ज्येष्ठे शुक्लत्रयोदश्याम्।
यत्र देवस्य सञ्जीवः स्यात् सदा धर्मसंश्रयः।।''

(ख) ब्राह्मणग्रन्थ :

तैत्तिरीय ब्राह्मणम् में स्नपन महत्त्व वर्णित है -

''स्नपनं देवप्रीत्यर्थं, आयुः कामाय, तेजः कामाय'' इत्यादि।

(ग) तिरुवाय्मोळि (तमिल दिव्यप्रबन्धम्) :

श्री नम्माल्वार के भक्ति स्तोत्रों में श्री वेंकटाचल के इस विशेष अनुष्ठान का उल्लेख अलंकारिक रूप में हुआ है।

ऐतिहासिक और लोक परम्परा :

तिरुमलै नम्बि, रामानुजाचार्य, वेदांत देशिक एवं अन्य आचार्यों द्वारा भी इस अभिषेक की महिमा का उल्लेख मिलता है। भक्तजन मानते हैं कि इस दिन अभिषेक दर्शन अत्यन्त पुण्यदायी होता है। - दर्शनमात्रेण पापक्षयः।

अन्य तथ्य

इस अवसर पर कोटि अर्चन (एक करोड नामों की अर्चना) भी की जाती है। विशेष पवित्र प्रसाद, कैलाशतीर्थ स्नान एवं गोदान आदि कार्य भी सम्मिलित होते हैं।

ज्येष्ठाभिषेकम् केवल एक पूजा कैंकर्य न होकर भगवान श्री वेंकटेश्वर के प्रति भक्त की पूर्ण समर्पण भावना का प्रतीक है। यह एक ऐसा पर्व है, जिसमें वैदिक परम्परा, आगमिक विधि और भक्तिपूर्वक सेवा - तीनों का समन्वय देखने को मिलता है।

श्री प्रपन्नामृतम्

(56वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री अनन्त आल्वार की कैंकर्यनिष्ठा

यतिराज श्री रामानुजाचार्य के एक अनन्य शिष्य श्री अनन्ताल्वार उनके आदेश से वेंकटाचल पर आकर श्री वेंकटेश भगवान का तुलसी पुष्प कैंकर्य करते हुय निवास कर रहे थे। एक समय में भक्त अनन्त आल्वार भगवान के उद्यान की सिंचाई के लिये ''रामानुज-सरोवर'' की खुदाई कर रहे थे। पतिधर्म परायणा उनकी साध्वी धर्मपत्नी खोदी गई मिट्टी टोकरी में सिर पर उठाकर दूर डाल रही थी। इतने पर एक बालक उनके समीप आया और वह उनके द्वारा किया जा रहे तालावखनन कैंकर्य में स्वयमेव मिट्टी उठाकर सहयोग देने लग गया। तब यह देखकर कि अपने अनन्य कैंकर्य कार्य का नाश हो रहा है अनन्ताल्वार ने उस बालक से कहा कि यदि तुम्हारी भगवत् कैंकर्य करने की कामना है तो कोई अन्य कार्य क्यों नहीं कर रहे हो। इस प्रकार मेरे द्वारा प्रारम्भ इस कार्य में सहयोग देकर मेरे जीवन को

क्यों बिगाड़ते हो। यह सुनकर वह बालक वहाँ से चला गया और कुछ दूर जाकर बैठ गया। जब भक्त अनन्ताल्वार की गर्भवती धर्मपत्नी तालाब से खोदी गयी मिट्टी की टोकरी लेकर इधर आती तो वह उनके हाथ से मिट्टी की टोकरी लेकर और उस मिट्टी को निर्दिष्ट स्थान पर डालकर फिर वह खाली टोकरी उनको वापस लाकर देने लगा। इस प्रकार परोक्ष रूप से वह बालक रूपी भगवान श्री वेंकटेश इस भक्त दम्पति के कैंकर्य में हाथ बँटाने लगे। अपनी पत्नी का इतनी शीघ्र ही इतनी दूर मिट्टी डालकर वापस आते हुए देखकर जब उन्होंने इसका कारण पूछा तो साध्वी पत्नी ने बतलाया कि एक दयालु बालक आगे खड़ा है जो मेरे हाथ से मिट्टी की टोकरी लेकर दूर डालकर आ जाता है, और फिर पुनः आकर खाली टोकरी मुझे लौटा देता है। पत्नी के इन

वचनों को सुनकर उस महात्मा ने श्री वेंकटेश भगवान को बालक रूप में अपने भगवत् कैंकर्य में विघ्नकारक समझकर शीघ्रता से उनका पीछा किया। बालक रूपधारी भगवान भी अपने पीछे दौड़ते हुए भक्त को देखकर शीघ्र ही वहाँ से भागे और अपने मंदिर में प्रविष्ट हो गए। मन्दिर के गर्भगृह आनन्दनिलय में जाते हुए भगवान को देखकर वे महात्मा भी वापस आ गए और अपने कैंकर्य में रत हो गए।

एक समय महात्मा अनन्ताल्वार बगीचे में भगवान के लिए तुलसी उतार रहे थे। इतने ही में एक साँप ने आकर उनको डँस लिया। दृढ़वृत्ति महात्मा ने इस पर कुछ भी विचार किये बिना उद्वेगरहित होकर स्नान किया और फिर शान्तिपूर्वक अपने नित्यनैमित्तिक कार्यों में लग गये। जब अन्य लोगों को इस घटना की जानकारी मिली तो वे शीघ्रता से आपके पास आये और बोले कि आपको सर्प विष शमन के लिये शीघ्र कुछ यत्न करना चाहिये। उनकी बातों को सुनकर आपने धैर्यपूर्वक उनसे कहा कि यदि मैं काटने वाले सर्प से अधिक बलवान हुआ तो रामानुज-पुष्करिणी में स्नान कर श्री वेंकटेश भगवान की सेवा कर विषहीन हो जाऊँगा और यदि मुझसे सर्प बलवान हुआ तो आज प्रेमपूर्वक विरजा नदी में स्नान कर श्रीवैकुण्ठनाथ भगवान की सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। इसमें डरने की क्या बात है। उनके दृढ़ भगवद्विश्वासमय उत्तर को सुनकर सभी श्रीवैष्णव विस्मित हुए।*

एक समय श्रीवैष्णवोत्तम बुद्धिमान महात्मा अनन्ताल्वार कोसलदेश की यात्रा के लिए वेंकटाचल से प्रस्थित हुए। मार्ग में पाथेय के लिये आपने श्री वेंकटेश भगवान का प्रसाद दध्योदन साथ ले लिया था। जब कुछ दूर चले और मार्ग में भूख लगी तो स्नानादि क्रिया से निवृत्त होकर भोजन करने की इच्छा से 'हँडिया' में से भगवत् प्रसाद निकाला-तब आपने देखा कि यह तो चींटियों से भरा हुआ है यह देखते ही आपकी नित्य सूरियों की प्रार्थना स्मरण हो गयी, जिसमें कि उन्होंने भगवान से यह निवेदन किया है कि- ''हम किसी भी रूप में आपके श्री वेंकटाचल पर

जुलाई 2025

06 तोलि (पहला) एकादशी,
चातुर्मास्य व्रत आरंभ
06-08 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का ज्येष्ठाभिषेक
06-09 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का पवित्रोत्सव
10 गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा
16 तिरुमल भगवानजी का आणिवर आस्थान
19-22 तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का पवित्रोत्सव
28 नागचतुर्थी
29 गरुडपंचमी

* स्वामी अनन्ताचार्य के इस दृढ़ विश्वास से यह शिक्षा मिलती है कि क्षुद्र मन्त्र प्रयोग आदि से व्याधि दूर करने का यत्न न करके शरीर यात्रा प्रारब्ध के अधीन और परलोक यात्रा भगवान के पराधीन समझकर प्रपन्नजन निश्चिन्त रहें।

जन्म लेवेंगे।'' इस असंख्य चींटियों में आपने उपरोक्त प्रार्थना कर्ता दिव्यसूरियों के ही दर्शन करते हुये तत्काल ही वापस वेंकटाचल पर आये और वह दध्योदन वहीं लाकर छोड़ दिया।

एक बार आप वृषभाद्रि के ऊपर पुष्पोद्यान में बैठे हुये भगवान के लिये पुष्पमाला गूँथ रहे थे। उस समय में श्री वेंकटेश भगवान ने आपके समीप एक अर्चक को भेजकर आपको बुलाया। इस भगवद्-आह्वान को सुनकर भी आप वहाँ नही गये और अपना पुष्पमाला कैंकर्य करते रहे। जब मालायें तैयार हो गयीं तब उनको टोकरी में रखकर श्री वेंकटेश भगवान को समर्पित करने के लिये उनकी सन्निधि में आये। भगवान ने उनको देखते ही उपालम्भ के स्वर में कहा कि- ''जब मैंने तुम्हे बुलाया उस समय तुम यहाँ क्यों नहीं आये?'' यह सुनकर आपने भगवान से कहा कि- ''भगवन्! मैं यहाँ आपके आदेश से कैंकर्यरत नहीं हूँ। जो आपके बुलाते ही दौड़ते हुए आ जाऊँ। मैं तो अपने आचार्य यतिराज श्री रामानुजाचार्य के आदेश से यहाँ आपके कैंकर्य में नियुक्त हूँ। जब तक उनके द्वारा बताया हुआ कार्य सम्पन्न नहीं होता तब तक मैं कहीं भी नहीं जा सकता।'' यह सुनते ही हँसते हुए श्री वेंकटेश भगवान ने कहा- ''यदि तुम्हें इस वेंकटाचल से निष्कासित कर दिया जाय तो फिर क्या करोगे?''

भगवान के द्वारा कहे गये विस्मित हास्यमय शब्दों को सुनकर भगवान के भक्त की आचार्यनिष्ठ परायण महात्मा अनन्ताचार्य ने उनकी सेवा में निवेदन किया कि- ''मायावी• परमात्मा, परमानन्द स्वरूप उत्तम वैकुण्ठधाम को छोड़कर स्वामिपुष्करिणी के तट पर श्रीलक्ष्मीजी के साथ प्रसन्न होकर निवास कर रहे हैं।'' इस प्रमाण के अनुसार आश्रित जनों के ऊपर वत्सलता के कारण आपने वृषभाद्रि को प्राप्त किया और मैंने अपने आचार्य यतिराज श्री रामानुजाचार्य की आज्ञा से भक्ति पूर्वक इस वेंकटाद्रि को प्राप्त किया है। (तात्पर्य यह है कि- जहाँ तक पराधीनता का सम्बन्ध है, उसमें हम दोनों ही समान हैं।) अन्तर तो केवल इतना ही है कि आप तो कुछ पहले ही यहाँ पर आ गये हैं और मैं बाद में आया हूँ। अतः उक्त कारण से आप मुझे यहाँ से निकालने में कैसे समर्थ है?

भक्त के द्वारा अत्यन्त दृढ़ता के साथ कहे गये इन भावपूर्ण वचनों को सुनकर एवं अपने आचार्य श्री यतिराज के प्रति उसकी चरम निष्ठा को देखकर श्री वेंकटेश भगवान अत्यन्त हर्षित हुये।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य के समस्त शिष्य समुदाय ने भगवान की माया पर विजय प्राप्त करके उनके द्वारा निर्दिष्ट कैंकर्य करते हुये समस्त लोकों में प्रसिद्धि प्राप्त की। जिनमें वेंकटाद्रि पर निवास करने वाले उक्त महात्मा अनन्ताल्वार का नाम भी युक्त है।

।। श्री प्रपन्नामृत का 56वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

• मायावी परमानन्दस्त्यक्त्वा वैकुण्ठमुत्तमम्। स्वामी पुष्करिणीतीरे रमया सह मोदते।।

आचारों में अनेकों अंतरार्थ

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

अनेकों लोग ''आचार'' शब्द सुनते ही डर जाते हैं। कुछ लोग आचारों का आचरण करना नामूसी मानते हैं। कुछ लोग आचारों का पालन करने वालों के देखकर उपहास करते हैं। उन्हें चाँदस मानते हैं। किन्तु यदि आचार का सही अर्थ जान ले तो वह डर, अपकीर्ति, नामूसी, उपहास इत्यादि कुछ भी नहीं रहते। आचार का अर्थ क्या है?

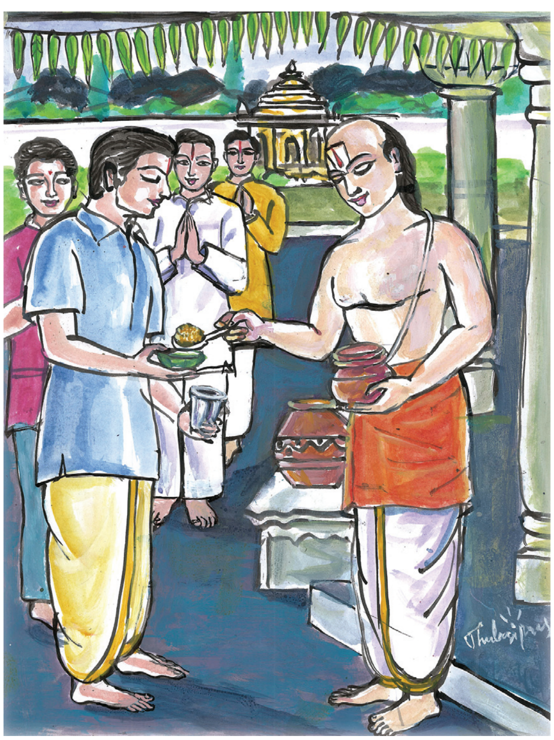

एक देश या प्राँत का समाज जिन आदतों को आदर्श मानकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी से लागू करता आ रहा है, उन्हीं आदतों को आचार कहते हैं। आचार रहित देश या समाज बिलकुल नहीं है। भारतीय आचारों को ही लीजिए; उनमें कई अंतरार्थ निहित हैं।

उदाहरण के लिए तडके ही, सूर्योदय से पहले जागकर नदियों, तालाबों के यहाँ जाकर स्नान करके सूर्योपासना करने को ही ले सकते हैं। ऐसा करने से प्राप्त होने वाले प्रयोजनों को विश्लेषण करें तो... तडके ही जागने से मन, बुद्धि पर सांसारिक समस्याओं का प्रभाव नहीं पडता। मन, बुद्धि, शुद्ध बनते हैं।

इसलिए उस समय जागकर निर्माणात्मक विचार करने पर सर्वजनरंजक बनते हैं। झरनों, नदियों, तालाबों के यहाँ जाकर स्नान करने पर, वहाँ तक पहुँचने की कोशिश में व्यायाम होता है। गाँव

वाले हर रोज घाट पर मिलकर परस्पर योगक्षेम जानने का अवसर मिलता है। कुएँ के यहाँ तो पानी भरकर स्नान करने से शरीर को व्यायाम मिलता है। घर पर नल के पानी के स्नान करने से बदन को अलसान ही मिलता है। कुछ भी प्रयोजन नहीं होता।

सूर्योदय के समय नदियों में स्नान करके जप-तपों का आचरण करने से हमारे शरीर को ''डी'' विटामिन मिलता है। ऐसे अनेकों प्रयोजन हमारे आचारों में मिले हुए हैं। एक स्नान ही नहीं... ऐसा विश्लेषण करते जाय तो प्रत्येक आचार में ऐसे अनेकों अंतरार्थ निहित हैं। उनमें सामाजिक प्रयोजन, भी हैं; हेतुबद्धता हैं; लोकहित है, गुणवत्तता है; परिमाणात्मकता है। इन्हें जानकर आचरण करें तो लोक-कल्याण की सिद्धि ही प्राप्त होगी।

परमयोगिनी मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा और अष्टांग योग

तेलुगु मूल - श्री जे.बालसुब्रह्मण्यम्
अनुवादक - डॉ.के.एम.भवानी

'योग' का अर्थ है - मिलन, एकता। दो पृथक् तत्त्वों का पूर्ण रूप से एकाकार हो जाना ही योग है। भारतीय तत्त्वज्ञान के अनुसार, जीवात्मा और परमात्मा के संयोग को ही योग की पराकाष्ठा माना गया है। इसी परमसत्य की अनुभूति कराना ही योगशास्त्र का उद्देश्य है।

जीवात्मा कोई और नहीं-स्वयं वही चेतनांश है जो अनंत, नित्य और अपार शक्ति से युक्त परमात्मा से विलग होकर माया के वशीभूत हुआ है। इंद्रिय-सुखों को मोह फँसकर वह बारंबार पाप करता है, जन्म-मरण के चक्र में उलझता है और दुख सहता है। यही जीवात्मा, यही मानव, बारंबार यही प्रश्न करता है - ''कब मिलेगा इस जन्म-मरण के बंधन से छुटकारा?''

जब मनुष्य अपने भीतर कार्यरत उस आंतरिक शक्ति को अनुभव करता है, जो इंद्रियों से परे है, तब वह उसे 'योगशक्ति' कहता है। इसी योगशक्ति के बल पर वह अपने अंतर में यात्रा आरंभ करता है-नेत्र मूँदकर, आत्मनिष्ठ होकर, मुक्तिपथ की ओर अग्रसर होता है। यह साधना पूर्णतः वैयक्तिक है, और इस मार्ग में सिद्धि प्राप्त करने हेतु अंसख्य जन्म भी लग सकते हैं।

ऐसे ही साधक थे सप्तर्षि, व्यास, वाल्मीकि और कई चक्रवर्ती सम्राट, जिन्होंने सनातन धर्म के आलोक में योगसाधना कर परमसिद्धि प्राप्त की।

महायोगशास्त्र : भगवद्गीता

द्वापरयुग में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया, वह केवल युद्ध-नीति नहीं था, वह महायोगशास्त्र था - 'भगवद्गीता'। श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा कि यह योग मैंने बहुत पहले सूर्यदेव को दिया, उन्होंने मनु को, मनु ने इक्ष्वाकु को और इस प्रकार यह ज्ञान राजाओं के माध्यम से लोक में 'राजयोग' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। समय के प्रवाह में यह गुप्त हो गया और पुनः अर्जुन को दिया गया।

प्राचीन काल में कपिल मुनि ने अपनी माता देवहूति को पुत्रवात्सल्यवश योगशास्त्र का उपदेश देकर उन्हें मोक्ष दिलाया। दत्तात्रेय भगवान ने भी अपनी माता अनसूया को ज्ञानवैराग्य का उपदेश

देकर उन्हें योगिनी बनाया और स्वयं सह्याद्रि पर्वत पर तपस्या करने चले गए। योग के अभ्यास से पहले साधक को मिलता है - स्वस्थ तन, फिर शांत मन, और अंततः परमात्मा का साक्षात्कार। यही योग की चरम उपलब्धि है-परमात्मा में लीनता।

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा-परमयोगिनी का जीवनपथ

मातृश्री वेंगमांबा ने अपने 'श्रीवेंकटाचल माहात्म्यम्' और 'राजयोग सारम्' - नामक दो पद्य काव्यों में, 'अष्टांग योग सारम्' नामक द्विपद काव्य में योग जैसे सूक्ष्म और गूढ़ विषय को अत्यंत सहज और सरल शैली में प्रस्तुत किया है।

वेंगमांबा जन्म से ही परमभक्त थीं। बाल्यकाल से ही उनमें वैराग्य की भावना जागृत हो चुकी थी। बचपन से ही वैराग्य भावना से ओत प्रोत वेंगमांबा को भाग्यवश योगमूर्ति सद्गुरु सुब्रह्मण्य योगी का आश्रय मिला। उनके द्वारा दी गई मंत्रदीक्षा और हस्त-संयोग से वेंगमांबा को योग का साक्षात्कार हुआ। उन्होंने तीव्र तप द्वारा स्वयं को सिद्धयोगिनी के रूप में प्रतिष्ठित किया।

वेंगमांबा ने तीर्थस्थलों में, विशेषतः तिरुमल की पर्वतश्रृंखलाओं में, तपस्या की। उन्हें प्राप्त योगविद्या को उन्होंने सहज भाषा में आम जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया और उसे पूर्ण भी किया। उनका यह कार्य प्रेरक और आश्चर्यचकित कर देने वाला है।

परब्रह्म - परमात्मा और जीवात्मा

तत्त्वचिंतन में 'परब्रह्म' को दो रूपों में समझाया गया है - 'परम्' और 'अपरम्'। 'परम्' अक्षर, अर्थात् नाशरहित परमात्मा; 'अपरम्' क्षर, अर्थात् विनाशी जीवात्मा। जीवात्मा उसी परम तत्त्व की अंशरूप है। लेकिन अज्ञानरूपी माया के कारण वह बारंबार जन्म लेता है, मरता है और मोह-माया में उलझा रहता है। इस भ्रम से मुक्त होने के लिए योगमार्ग ही एकमात्र उपाय है।

वेंगमांबा इसी योगपथ को स्पष्ट करती हैं।

योग की आठ सीढ़ियाँ-अष्टांग योग

योग का ज्ञान केवल सद्गुरु से ही प्राप्त किया जा सकता है। अष्टांग योग की आठ सीढ़ियाँ हैं :

1) **यम :** इंद्रिय संयम और आहार-निद्रा पर नियंत्रण।

2) **नियम :** गुरुभक्ति और वैराग्य का पालन।

3) **आसन :** स्थिर, सहज मुद्रा में बैठकर आत्मचिंतन।

4) **प्राणायाम :** गुरु द्वारा निर्देशित श्वास का अनुशासित अभ्यास।

5) **प्रत्याहार :** चित्तविकारों से मुक्ति और मन की स्थिरता।

6) **ध्यान :** अपने अंतर में सर्वव्याप्त आत्मा की अनुभूति।

7) **धारणा :** परमात्मा का तेजस्वी रूप अंतर में स्थापित करना।

8) **समाधि :** जैसे चीनी जल में घुल जाती है, वैसे ही आत्मा का परमात्मा में विलीन हो जाना।

वेंगमांबा इन आठ अंगों के साथ-साथ विभिन्न अन्य योगपद्धतियों की भी चर्चा करती हैं- अजपा गायत्री, लययोग, हठयोग, भौति कर्मा, वस्ति कर्मा, नेति, त्राटक, नौलि कर्मा, कपालभाति जैसे छः कर्मों को, सूर्य भेदन कुंभक जैसे आठ तरह के कुंभकों को, सांख्ययोग, तारकयोग, अमनस्कयोग, मंत्रलययोग तथा राजयोग के लक्षणों और आत्मयज्ञ का वर्णन भी करती हैं। इस सबका अभ्यास सद्गुरु के सान्निध्य में ही किया जाना चाहिए-यह उनका स्पष्ट निर्देश है।

जीवन का चरम लक्ष्य-साक्षात परमात्मा का सान्निध्य

इतनी गूढ़ साधना को मातृश्री वेंगमांबा ने गुरु कृपा से प्राप्त किया। उनका जन्म 1730 में चित्तूर जिले, आं.प्र. के तरिगोंडा नामक स्थान में हुआ। वे तिरुमल आईं और लगभग 90 वर्षों की आयु में 1817 में श्री वराहस्वामी मंदिर के समीप स्थित अतिथिगृह के पीछे योगसमाधि में लीन हो गईं।

जनश्रुति है कि आज भी प्रतिदिन रात्रि 'मुत्याल आरति' यानी एकांत सेवा में वे अपने योगशरीर से तिरुमल मंदिर आती हैं। लगभग सत्तर(70) वर्ष पूर्व सिद्ध पुरुष मलयाल स्वामी ने उन्हें तिरुमल की पर्वतश्रृंखलाओं में योगशरीर में विचरण करते हुए देखा था।

वर्तमान साधकों के लिए संदेश

मातृश्री वेंगमांबा द्वारा दिए गए अष्टांग योग पथ में यदि साधक थोड़ा-सा भी नियमित अभ्यास करें-प्राणायाम आदि आठ नियमों का पालन करते हुए-तो उन्हें शारीरिक सुदृढ़ता, मानसिक शांति और आंतरिक तेज की प्राप्ति होगी। यदि वे संकल्पपूर्वक साधना करते रहें। गुरु कृपा और ईश्वरीय अनुग्रह अवश्य प्राप्त होगा।

मानव शरीर - ईश्वर की दिव्य रचना

मानव का यह शरीर कोई साधारण रचना नहीं - यह स्वयं भगवान की अद्भुत सृष्टि है। इस देह के माध्यम से ही जीव को मोक्ष की ओर यात्रा करने का अवसर प्राप्त होता है। योगियों और महर्षियों ने इस देह को केवल हाड़-मांस की पिंड नहीं माना, बल्कि एक दिव्य साधना-पीठ के रूप में देखा है। उनके अनुसार,

यह शरीर षट्चक्र से युक्त है-अर्थात छह सूक्ष्म चक्रों से बना हुआ एक आध्यात्मिक यंत्र। इस रहस्यमयी देह की आंतरिक संरचना को वे इस प्रकार वर्णन करते हैं :

मूलाधार चक्र - शरीर की जड़ में स्थित, जहाँ गणपति का निवास माना गया है।

स्वाधिष्ठान चक्र - मूलाधार से दो अंगुल ऊपर, जिसमें ब्रह्म का वास है।

मणिपूरक चक्र - स्वाधिष्ठान से लगभग छह अंगुल ऊपर, नाभि के समीप, जहाँ भगवान विष्णु प्रतिष्ठित हैं।

अनाहत चक्र - इसके दस अंगुल ऊपर, हृदय में, जहाँ रुद्र प्रकाशित होते हैं।

विशुद्ध चक्र -कंठ स्थान में स्थित, जहाँ सदाशिव मुख्य देवता हैं।

आज्ञा चक्र - भ्रूमध्य में, जहाँ परमात्मा या परब्रह्म का प्रकाश प्रकट होता है।

इन सभी चक्रों के ऊपर, मस्तिष्क के मध्य भाग में स्थित है - सहस्रार चक्र, जहाँ सहस्र दलों से युक्त कमल में सद्गुरु के चरण कमलों की ज्योति जलती रहती है। ज्ञानीजनों का कहना है कि योगसाधक जब अपने अभ्यास में प्रगति करता है, तो वह प्रतिदिन इस दिव्य ज्योति का साक्षात्कार करता है। यह कोई कल्पना नहीं, अपितु अनुभूत सत्य है - एक गूढ़ रहस्य जो आत्मानुभूति से ही खुलता है।

षट्चक्रमय सप्तगिरियाँ - तिरुमल की योगभूमि

जैसे मानव शरीर में षट्चक्र होते हैं, वैसे ही तिरुमल का यह सप्तगिरिक्षेत्र भी एक योगिक संरचना है। यहाँ की प्रत्येक पर्वतशृंखला को एक-एक चक्र के प्रतीक रूप में देखा जाता है। जब साधक इन छह पर्वतों की कठिन चढ़ाई करके अंतिम सातवें पर्वत पर पहुँचता है, तो वह सहस्रार चक्र का प्रतीक सहस्रदल पद्म देखता है - जहाँ आनंदनिलय में विराजमान भगवान श्री वेंकटेश्वर का दर्शन होता है। यह चढ़ाई मात्र भौतिक नहीं, एक गूढ़ आध्यात्मिक आरोहण है। जैसे साधक शरीर के षट्चक्रों को पार करता हुआ सहस्रार में प्रवेश करता है, वैसे ही यह सप्तगिरि यात्रा अंततः आत्मा को ब्रह्म के साक्षात्कार तक ले जाती है।

चलिए, हम भी चलें उस योगपथ पर...

आइए, हम इस योगपथ को अपनाकर, आनंदनिलय श्री वेंकटेश्वर की कृपा से, जीवन को सफल और सार्थक बनाएँ।

ॐ नमो वेंकटेशाय।

पूरी - जगन्नाथ - रथयात्रा

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

आमुख

ओडिशा के श्री जगन्नाथजी का दिव्य मंदिर एक प्रसिद्ध चारित्रात्मक विशेष है, जो प्रभु विष्णुभगवान का ही एक अवतार है, जो चार-धाम-यात्रा का एक अंश भी है! यह मंदिर भारत के पूरब तीरस्थ नगर ''पूरी'' में विद्यमान है। ओडिशा राज्य में। पूरी-जगन्नाथ हिन्दू-यात्रियों के लिए एक प्रसिद्ध यात्रा-स्थल रहा है। वैष्णव-धर्मी यात्रियों का पूरी-जगन्नाथ महान् दर्शनीय क्षेत्र रहा है!

यह मंदिर प्रभु जगन्नाथजी का और उनके सहजन्मी देवता ''बलभद्रजी एवं सुभद्राजी'' का पावन निवास-स्थल भी रहा है।

यह आलय कलिंग-शिल्पकला-चातुरी का एक बेजोड़ उदाहरण रहा है। अत्युत्तम शिल्प-विधान तथा परंपरागत प्रवेश-द्वारों का यह मंदिर अत्युत्तम निधान रहा है।

पूरी जगन्नाथजी का मंदिर अपनी सांवत्सरिक रथ-यात्रा के लिए विश्व-ख्यात है, जिस महोत्सव के दौरान् मंदिर के देवी-देवता नगर में ही दूसरे स्थल पर स्थित ''गुण्डीचा-मंदिर'' तक लिए ले जाया करते हैं!

उत्सवों के रीत और रिवाज़

मंदिर के अनोखे रीत और रिवाज़ हैं। मंदिर का पताका रोज़ाना बदल दिया जाता है जो ''पतितपबान'' कहलाता है और भी मंदिर में स्थित देवी-देवताओं के लिए महाप्रसाद का भोग किया जाता है, जिन प्रसादों की तादाद काफी अधिक मात्रा में होती है!

मंदिर का निर्माण भी काफी अनोखी शिल्प-संप्रदायों का सम्मेलित रूप-वैभव का होता है। और, मंदिर में विराजमान देवी-देवताओं की प्रतिमाओं में भी अनोखी परंपरागत शिल्प-कला दर्शन देती है। जगन्नाथजी का भव्य मंदिर पूरी नगर के बीचों-बीच स्थित है।

मंदिर का इतिहास

भारत में पुराण काल से प्रसिद्ध नगरों में पूरी एक है। यह नगर ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से 60 कि.मी. की दूरी पर है। इस कस्बे को पुरातन काल में पुरुषोत्तम क्षेत्र अथवा श्रीक्षेत्र नामों से पुकारा जाता था।

पूरी क्षेत्र में भगवान महाविष्णु जगन्नाथ नाम से स्थित हो करके पूजित हो रहा है। यह भारत के प्रमुख वैष्णव देवालयों में प्रमुख है तथा ''चारधाम'' वाले पुण्यक्षेत्रों में से एक है।

इस पवित्र मंदिर का निर्माण ई. सदी के 1078 में कलिंग शासक ''अनंतवर्मा चोडगंगादेव'' महाराजा ने आरंभ किया था, तो उसके पोता ''राजा अनंगभीमदेव'' महाराज के शासन में पूरा हो पाया था। इससे पहले कहा जाता है कि इस आलय का निर्माण ''इन्द्रद्युम्न महाराजा'' ने किया था। इस मंदिर के पीछे अनेक कथा-कारण जुड़े हुए हैं।

रहस्य पूजाएँ - विश्वावसु

कहा जाता है कि पूरी का मंदिर गिरिजनों का है। यहाँ का देव भी गिरिजनों का प्रतिष्ठित रहा है। जंगल में एक रहस्य प्रदेश में इस जगन्नाथ की गिरिजनों के राजा विश्वावसु ने पूजा की थी! इस विषय को जानने पर राजा इन्द्रद्युम्न ने इस राजा को जानने-हेतु ''विद्यापति'' नाम के एक ब्राह्मण युवक को भेजा था, जिस युवक ने राजा विश्वावसु की पुत्री ''ललिता'' से प्रेम करके विवाह किया था।

इस जगन्नाथजी के विग्रह के दर्शन के लिए आतुर और बार-बार आग्रह करते हुए अपने दामाद विद्यापति की मिन्नत मानते हुए उस सवर राजा विश्वावसु ने विद्यापति की आँखों पर पट्टी बाँध कर, मंदिर तक ले जाता है।

मगर फिर, मेधावी दामाद विद्यापति ने रहस्यमयी ढंग से मंदिर के रास्ते में ''सरसों के बीजों'' को फेंकता चला आया था, जो कुछ दिनों के पश्चात उग आकरके रास्ता स्पष्ट दिखाई देने लग गया। इस परिणाम पर उत्साहित हो करके विद्यापति ने कलिंगराजा विश्वावसु को खबर भेजा था।

सपने में भगवान जगन्नाथ

ससंभ्रम राजा इन्द्रद्युम्न जब जंगल में पहुँचा, तो भगवान के विग्रह अदृश्य हो गये। इस परिणाम पर निराशित राजा इन्द्रद्युम्न अनशन-दीक्षा का

ग्रहण कर, ''अश्वमेथ यज्ञ'' का आरंभ कर दिया।

इस सिलसिले में राजा ने 'नीलाचल' पर एक मंदिर का निर्माण कर, उसमें नरसिंह स्वामी के विग्रह का प्रतिष्ठापन किया और उधर ही सोता था। एक रात सपने में श्री जगन्नाथजी ने दर्शन देकर, समुंदर के तट पर बहती ''चाँकी नदी'' के मुखद्वार पर नीम के दारु (लकडी) बहते आयेंगे, जिन लकडियों से ''दारु-शिल्पों'' का निर्माण कर देने का आदेश दिया था।

उसी के अनुसार लकड़ियाँ तो नदी में बह कर तो आयीं, मगर विग्रहों को कौन शिल्पित करेगा?! - कोई आगे न आया। राजा बड़ी सोच में पड़ गया था।

उस विपत्कर परिस्थितियों में राजा के पास देवशिल्पी ''विश्वकर्मा'' एक विकलांग के रूप में आया और कहा, ''मैं अकेला एक कमरे में विग्रहों की रूप कल्पना करूँगा रहस्य ढंग में, उस समय मैं पानी तक न स्वीकार करता और विग्रहों के बनने के 21 दिनों तक उस कक्ष्य में कोई न आवे और मुझे आतंकित करे!!''

राजा ने इस पर सहमत प्रकट किया। मगर फिर, दिन बीतते गये। उस शिल्पी के बसते कमरे से कोई आवाज़ तक नहीं आयी। इस परिणाम पर आंदोलित ''रानी गुंडीचादेवी'' के बार-बार आग्रह किये जाने पर, राजा इन्द्रद्युम्न ने उस कक्ष्य के दरवाजे खुलवा दिया।

पूरी के विग्रहों में न बने वरदहस्त

कक्ष्य में शिल्पी न था!

बिना हाथ और पैरों के शिल्पित विग्रह दिखाई दिये।

मूर्तियाँ अधूरी थीं, काल-परिमिति से पहले ही कक्ष्य के कपाट खोल देने से! काश!!

राजा इस विपत्कर परिणाम की वजह से बड़ा दुःखित हो गया। उसने ब्रह्मदेव से प्रार्थना की।

ब्रह्म ने प्रत्यक्ष हो कर राजा इन्द्रद्युम्न को आनती दी कि आयिंदा इसी रूप में इन देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना हो जावे। और, स्वयं ब्रह्म ने ही उन मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा कर दी।

यही कारण है कि पूरी जगन्नाथजी के प्रख्यात मंदिर में मूर्तियों के अभय एवं वरदहस्त न दिखाई देते। चतुर्दश भुवनों के वीक्षण-हेतु उनके इतने बड़े-बड़े नेत्रों का तो हुआ होना दिखाई देता है।

देश में किसी भी मंदिर में न होने के तौर पर-पूरी जगन्नाथजी के मंदिर में मात्र ''काठ की मूर्तियों'' की पूजा-उपासना की जाती है, वह भी बिना हाथ-पैरों का!!

इन काठ की मूर्तियों को 8-12-19 सालों में एक बार बदल डाल कर नयी मूर्तियों के प्रतिष्ठापन कर देने का संप्रदाय चलता है।

इस पवित्र नयी मूर्तियों के प्रतिष्ठापन कार्य को ''नव कलेबर उत्सव'' नाम से पुकारा जाता है।

पूरी जगन्नाथ रथयात्रा

पूरी जगन्नाथजी के मंदिर में संचालित सभी उत्सवों में ''रथयात्रा'' अत्यंत प्रसिद्ध है, जो ''पूरी जगन्नाथ रथयात्रा'' नाम से पूरे विश्वभर में विख्यात है। पूरी के जगन्नाथजी की रथयात्रा में लाखों की मात्रा में भक्तजन सम्मिलित होते हैं। रथयात्रा 12 दिनों तक चलने वाला एक महान् उत्सव है।

जगन्नाथ-रथयात्रा उत्सव ई. के 12-16 शताब्दियों के बीच प्रारंभ हुई थी। इसके मूल में विविध कथा-पुराण बने हुए हैं। कुछ लोगों का कहना है कि भगवान श्रीकृष्ण अपनी माँ के जन्मस्थल के संदर्शन के लिए यात्रा की सूचना है। और कुछ लोग इस यात्रा का आपादन राजा इन्द्रद्युम्न से करते हैं। उनका विश्वास है कि राजा इन्द्रद्युम्न ने ही इस रथयात्रा का सर्व प्रथम आरंभ किया था।

रथ पर जगन्नाथ जाते कहाँ?

इस उत्सव के समय, तीनों देवताओं-जगन्नाथजी, बलभद्र और बहन सुभद्रा को अनेकों लोग तीन भारी रथों में ''बड़ा दंड (Grand Avenue)'' के ऊपर से ''गुण्डीचा मंदिर'' ले जाते हैं। वहाँ इन तीनों देवताओं का आवास एक सप्ताह तक होता है। फिर अवधी के परिसमाप्ति के उपरांत जगन्नाथजी के परिवार को पुनः अपने मंदिर में ले आते हैं।

रथयात्रा पर पौराणिक कथा

श्रीकृष्ण और बलराम को मारने-हेतु, उनके मामा कंसराक्षस ने उन्हें मथुरा में बुलाया था। कंस ने 'अक्रूर' को रथ पर गोकुल में भेजा था। राजा कंस के आह्वान पर श्रीकृष्ण अपने भाई बलराम से मिल कर रथ पर आसीन होकर मथुरा गया था।

भक्तलोग श्रीकृष्ण के इस निष्क्रमण दिवस को ''रथयात्रा'' नाम से मनाते हैं।

ऐतिहासिक कहानी

वैसे पूरी जगन्नाथजी की रथयात्रा पर अनेक ऐतिहासिक कहानियाँ बनी हुई हैं। 14 चक्र होते हैं। एक ऐसे कथन के अनुसार जगन्नाथ आलय के स्थापित राजा इन्द्रद्युम्न की रानी ''गुण्डीचा'' को दिये वाग्दान के अनुसार, जगन्नाथजी, उसके भाई बलभद्र एवं सहोदरी सुभद्राजी समेत सालभर में एक बार गुण्डीचा के मंदिर का संदर्शन करने इस तरह रथ पर आसीन होकर पधारते हैं।

समापन

पूरी के प्रधान देवता जगन्नाथजी के रथ को ''नंदिघोषा'' नाम से पुकारते हैं। जिसे 16 चक्र होते हैं। इस रथ के सारथी ''दारुक'' है। बलभद्र के रथ को ''तालध्वज'' कहते हैं। 14 चक्र होते हैं। सुभद्रा देवी रथ को ''दरपादालन'' कहते हैं। 12 चक्र होते हैं।

पूरी की रथयात्रा हमारे जीवन के प्रयाण की सूचना देती है। यह यात्रा आत्मा का परमात्मा से मिलन का सूचक भी है। रथों को खींचना दैविक आशीर्वाद लेने को सूचित करता है। इससे अपने किये पापों की शुद्धि हो जाती है। अस्तु।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

कट्टप्पोरुळै मरैप्पोरुलेंड्डु, कयवर् सोल्लुम्
पेट्टै क्केडुक्कुम् पिरानल्लने, एन् पेरुविनैयै
क्किट्टि क्किळंगोडु तन्नरुळेन्नु मोळ्वाळुरुवि
वेट्टि क्कळैन्द, इरामानुज नेन्नुम् मेय्त्तवने ॥९३॥

स्वकीयपरमकृपाभिधानया छुरिकया मदीयानि महापातकानि समूलमुन्मूलितवान् महातपस्वी भगवान् रामानुजः असदर्थान् वेदार्थत्वेन प्रलपतां कुद्दशां खलानां भ्रामकवाक्यान्यशेषतो निराकृतवान् खलु।

मेरे पास पधारकर अपनी कृपारूपी सुंदर खड्ग को मियान से निकाल कर, उससे मेरे घोर पापों को जड से उखाड देनेवाले महातपस्वी श्री रामानुज स्वामीजी ने वेदों के अपार्थ करनेवाले कुदृष्टियों के दुर्वाद दूर किये।

क्रमशः

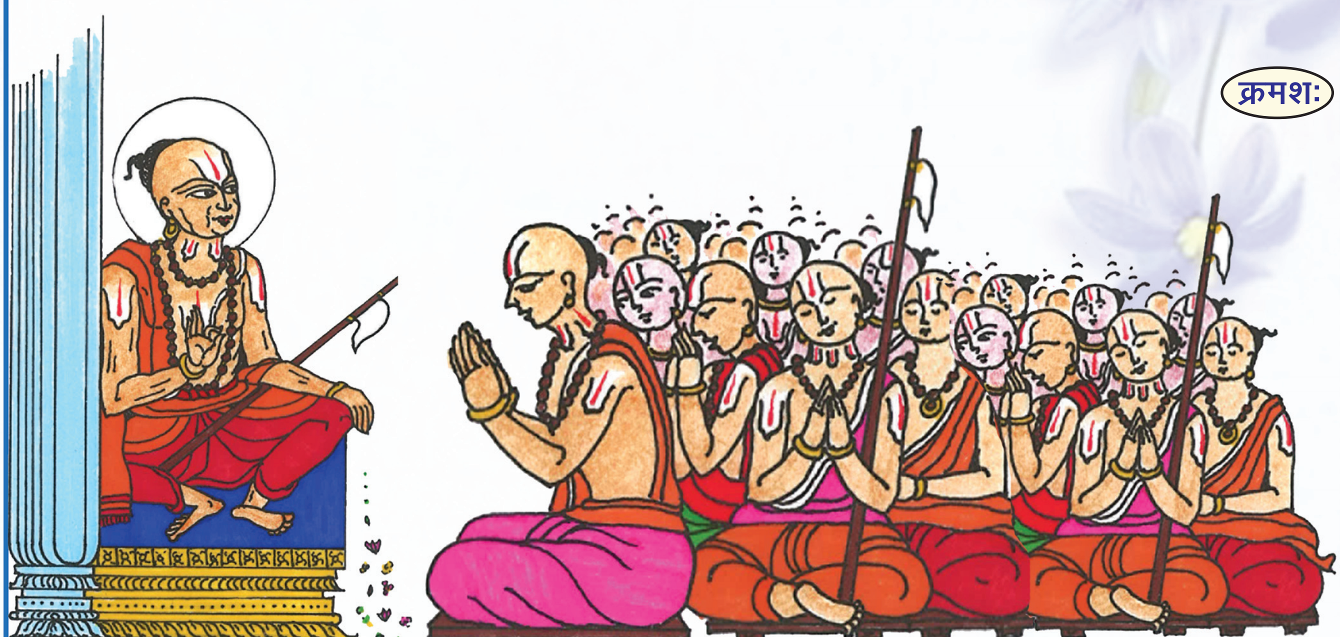

कीर्तन

वैष्णव भक्ति संप्रदाय में नवधा भक्ति का आविष्कार हुआ है। नौ प्रकार की भक्ति पद्धतियों में कीर्तन का सर्वाधिक महत्व है। क्यों कि श्रवणं, अर्चनं, वंदनं आदि में भी कीर्तन का प्रयोग होता है। वाग्गेयकार अन्नमय्या और मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा जैसे श्री वेंकटेश्वर स्वामी के परम कीर्तनकारों ने अनेक संकीर्तन रचे हैं। जो तेलुगु भाषा-साहित्य में अनुपम स्थान रखते हैं। उन्हीं संकीर्तनकारों के कुछ चुने हुए संकीर्तनों को हिंदी में प्रस्तुत करने का यह प्रयास है।

संकीर्तन का तेलुगु शीर्षक

''ब्रह्म कडिगिन पादमु...''

संकीर्तन का हिंदी अनुवाद

चरण इसे ब्रह्म ने धोया,
चरण स्वयं ब्रह्मांड है भाई ।।चरण इसे।।
भूदेवी से पूजित है यह,
बलि के सिर पर विलसित है यह,
गगन को इसने किया ताडित
रिपु-कुल को भी किया है मोदित। ।।चरण इसे।।
एक पापिन का दोष मिटाया,
एक पन्नाग का, क्रोध किया चूर
स्पर्श से इस के, पुलकित लक्ष्मी
जय जयकार करो इस चरण की। ।।चरण इसे।।
परम योगी भी पाते मोक्ष इसी से
परमतत्व का बोध भी होता इसी से

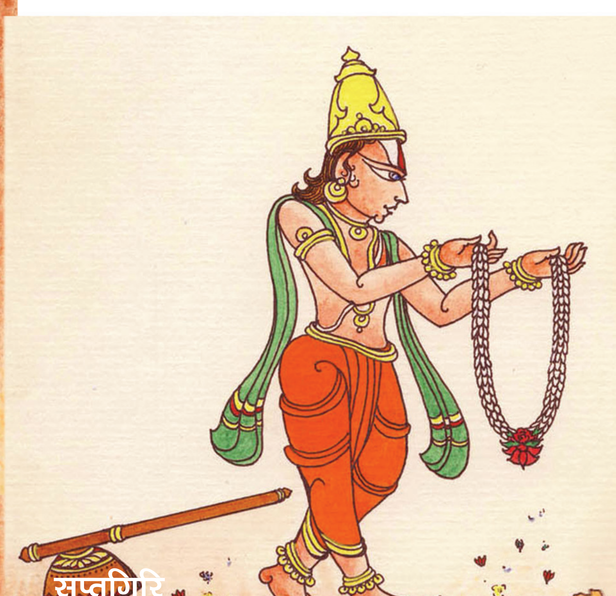

श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

भव्य मुक्ति-पद वेंकट गिरि का
ज्ञान मिलेगा-इसी चरण से। ।।चरण इसे।।

भावार्थ

भगवान की अर्चामूर्ति के दर्शन नख-शिख करने की परंपरा है। उसी के अनुक्रम में सर्वप्रथम अन्नमय्या ने श्री वेंकटेश्वर भगवान के चरणों की महिमा को एक सुंदर संकीर्तन में कीर्तन-गान किया है। विशेष बात है यह कि इस संदर्भ में अन्नमय्या ने श्री महाविष्णु के दशावतारों का अनुपम उल्लेख भी किया है।

कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर के दिव्य चरण कलिपुरुष से प्रताडित और प्रभावित सारे मनुष्यों के पाप को धोनेवाले एवं मोक्ष को प्रदान करनेवाले हैं।

अन्नमय्या ने कीर्तन किया कि हे श्री वेंकटेश्वर आप के दिव्य चरण को ब्रह्म ने स्वयं ही धोया है। क्यों कि वह साक्षात ब्रह्मांड सम है। आप का चरण स्वयं ब्रह्म एवं ब्रह्मांड भी है। मतलब श्री वेंकटेश्वर भगवान स्वयं ही परम ब्रह्म है। इसलिए उन के दिव्य चरण भी परम ब्रह्म स्वरूप ही हैं।

आप के चरणों ने ही पृथ्वी को नापा है। वामन अवतार में बलि से तीनों लोकों की रक्षा के लिए आप ने पूरे ब्रह्मांड को ही अपने चरणों से नाप लिया है। तीन कदम भू को दान के रूप में मांग कर एक कदम से पृथ्वी को और एक कदम से आकाश को नाप दिया है। तीसरे कदम से बलि को पाताल भेज दिया हैं। वामन अवतार में एक चरण से आकाश को लात मारने पर ब्रह्म ने उस समय उस चरण को अपने कमंडल के जल से श्री महाविष्णु के चरण को धोया था। वही जल आकाश गंगा के रूप में प्रवाहित हुआ है, ऐसा भागवत पुराण से पता चलता है। बिना किसी झिझक से एक कदम से आप ने आकाश को लात मार कर नाप दिया है। देवताओं के राजा इंद्र की रक्षा भी आप के ही चरण ने की है।

रामावतार के समय आप के चरण ने ही कामिनी अहल्या के पाप को मिटाया था। रामावतार की कथा स्पष्ट करती है कि शापग्रस्त अहल्या का शाप विमोचन भी इसी चरण ने किया था। द्वापरयुग में कालीय सांप के फण पर नाचकर इसी चरण ने उस के अहं को तोडा था। प्रेम मूर्ति लक्ष्मी देवी से सदा आप के चरण को दबाया जाता है। कल्कि अवतार में बिना किसी नियंत्रण से दौडनेवाले दिव्य अश्व को आप के चरण ने ही वश में कर लिया है। और तो और श्रेष्ठ योगी जनों को आप के ही चरण ने मुक्ति का मार्ग दिखाया है। आप के चरण ने ही सारे भक्तों को यह स्पष्ट किया है कि वेंकटाद्री ही शाश्वत सुख और मोक्ष देनेवाले दिव्य पर्वत हैं। इसलिए आप के ही चरण हमारे लिए परमपद या कैवल्य है। और समय न गंवाकर आप के चरणों की शरण में जाना ही हमारा कर्तव्य बनता है।

दास पितामह श्री श्रीपादराज

- डॉ.मैथिली प्र.राव

श्रीपूर्णबोध कुलवार्धि सुधाकराय
श्रीव्यासराज गुरवे यतिशेखराय।
श्रीरंगविट्ठल पदांबुज बंभराय
श्रीपादराजगुरवेस्तु नमस्तुभ्यम।।

श्री माधवाचार्य के प्रत्यक्ष शिष्य, श्रीपद्मनाभ भट्टतीर्थ के वंशज, माधवाचार्य के बाद 8वें यति, व्याससाहित्य और दाससाहित्य दोनों में दैवी कौशल से अनुगृहीत, श्री श्रीपादराज को समर्पित यह गुरु स्तोत्र है। इन्हें लक्ष्मीनारायण तीर्थ या श्रीपादराय के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म सन् 1404 में कर्नाटक के अब्बूरु में हुआ था। इनके माता-पिता शेषगिरि और गिरियम्मा परम भक्त और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। इन्हें ध्रुव का अवतार भी माना जाता है।

श्रीपादराज मवेशियों की देखभाल करते और अपने खाली समय में संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन करते थे। किंवदंतियों में बताया गया है कि अब्बूरु जाते समय श्री स्वर्णवर्ण तीर्थ की मुलाकात युवा श्रीपादराज से हुई और कुछ समय के बाद वे युवा की सहज बुद्धि से चकित हो गए। बाद में उन्होंने उस युवा को शिक्षा दी और उसे लक्ष्मीनारायण तीर्थ नाम से एक भिक्षु के रूप में नियुक्त किया। लक्ष्मीनारायण तीर्थ ने अंततः मुलबागल में मठ के पुजारी के रूप में श्री स्वर्णवर्ण तीर्थ का स्थान लिया। श्रीपादराज, राघवेंद्र मठ के संस्थापक विभुदेंद्र तीर्थ के समकालीन थे, जिन्होंने उन्हें श्रीपादराज या श्रीपादराय की उपाधि दी थी।

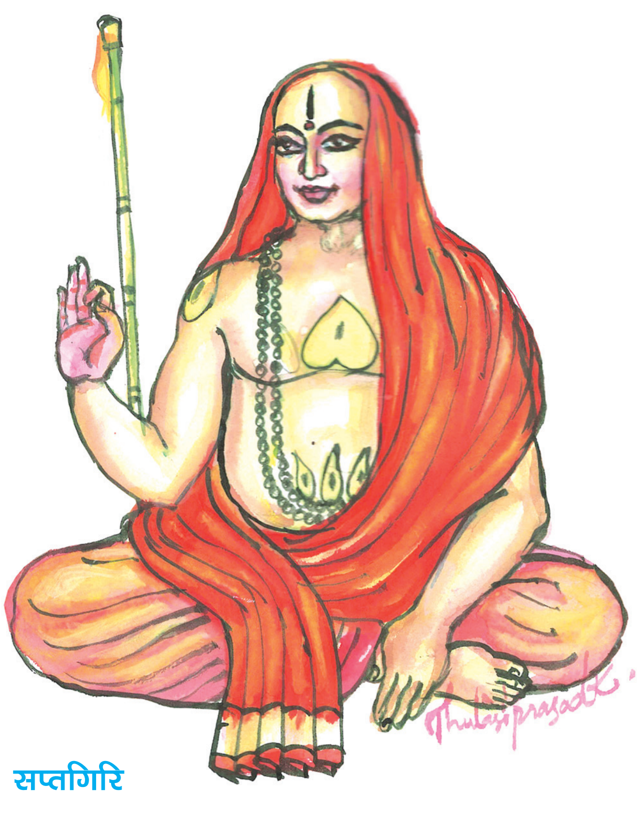

बेंगलूरु के पास स्थित, तिरुपति जाने वाले मार्ग में पडने वाले, मुलबागल नामक शहर में, भगवान श्री योग नरसिंह के धाम को अपना घर बनाकर उस शहर को भी ख्याति प्रदान की। किंवदंती है कि वृद्धावस्था के कारण जब वो काशी नही जा पाए तो गंगा मैया ने स्वप्न में प्रकट होकर उनसे कहा कि वो वहीं पर नरसिंह तीर्थ में निवास करेंगी। तब से यह विश्वास है कि नरसिंह तीर्थ में स्नान करना गंगा में ही स्नान करने के समान है। एक अन्य किंवदंती के अनुसार उन्हें तिरुपति का पहाड शालिग्राम की भाँति दिखाई दिया तो उन्होंने उस पर पैर न रखकर अपने घुटनों पर चढाई की और मंदिर पहुँचे। उन्होंने भगवान बालाजी को शालिग्राम का एक हार भी प्रदान किया जो आज भी उनके ऊपर चढाया जाता है।

एक हिंदू द्वैत दार्शनिक, विद्वान और संगीतकार और मुलबागल में माधवाचार्य मठ के पुजारी श्रीपादराज जी को व्यापक रूप से नरहरि तीर्थ के साथ-साथ हरिदास आंदोलन का अग्रणी माना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं से कर्नाटक संगीत और हिंदुस्तानी संगीत दोनों को प्रभावित किया है। उनके सरल शब्दों और संगीत के संयोग से रचित आध्यात्मिक भजनों ने उन्हें लोकप्रिय बनाया। श्रीपादराय की सरल और ग्रामीण प्रारंभिक जीवन और स्थानीय भाषा के साथ घनिष्ठ

संबंध ने उनकी कविता को प्रभावित किया। 'रंग विठ्ठल' अंकित नाम के तहत लिखे गए उनके गीतों और भजनों में रहस्यवाद और मानवतावाद से युक्त द्वैत सिद्धांतों का आसवन स्पष्ट परिलक्षित है। सुळादी,* संगीत संरचना के आविष्कार का श्रेय भी इन्हीं को दिया जाता है और उन्होंने कई उगाभोग,** सुळादी, कीर्तन, दंडक, व्रत्तनामादि के साथ लगभग 13000 की रचनाएँ हैं। श्री मदानंद तीर्थ द्वारा रचित 'हरिसर्वोत्तमतत्व' का तमिल से कन्नड में अनुवाद करके सामान्य जनता को मध्वाचार्य के आध्यात्म का परिचय दिया। उन्होंने जयतीर्थ के न्याय सुधा पर 'न्यायसुधोपन्यास वाग्वज्र' नामक एक टिप्पणी भी लिखी। इनके अलावा 'भ्रमरगीता', 'वेणुगीता', 'गोपीगीता' और 'माधवनामा' नामक भक्ति रचनाओं द्वारा इन्होंने कन्नड साहित्य को समृद्ध किया जिनमें भक्ति की महानता और अच्छे जीवन के गुणों का

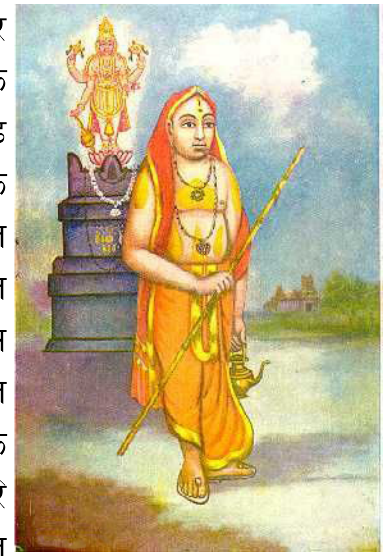

गुणगान किया गया और उन्हें भगवान की पूजा के दौरान गाया गया। कन्नड में अपने भक्ति गीतों के लिए प्रसिद्ध श्रीपादाराज ने दास साहित्य, सूत्रपात किया। अतः उन्हें 'दास पितामह' की उपाधि प्राप्त की। यही कारण है कि किसी भी पारंपरिक हरि कथा प्रवचन की शुरुआत में गाए जानेवाले स्तोत्र में उनका नाम सबसे पहले आता है ''नमः श्री पादराजाय नमस्ते, व्यास योगिने नमः पुरंदर्यराय विजयार्थ ते नमः।''

वे सळुवा नरसिंह देव राय के सलाहकार थे और उन्होंने युवा व्यासतीर्थ का भी मार्गदर्शन किया था। श्रीपादराज जी ने मुलबागल में एक विद्या केंद्र की स्थापना की जहाँ विश्व भर से विद्वान आते और अध्ययन करते। अतः इसे दक्षिण का नालंदा भी कहा गया।

1504 ई. श्रीपादराज ने अपने शिष्य श्री हयग्रीव तीर्थ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और ज्येष्ठ शुद्ध चतुर्दशी के दिन मुलबागल के पास स्थित श्री नहसिंह तीर्थ में जीव-समाधि धारण करते हुए वृंदावन में प्रवेश किया। भक्त अभी भी मुलबागिलु वृंदावन में उनकी उपस्थिति महसूस करते हैं।

---

* सुळादी संगीत रचना का एक विशिष्ट रूप है। जिसे अक्सर कई समय चक्रों में सेट किया जाता है, विशेष रूप से कर्नाटक में हरिदास परंपरा से जुड़ा हुआ है।

** उगाभोग एक विशिष्ट प्रकार की संगीत रचना है, जो विशेष रूप से कर्नाटक में हरिदास संगीतकारों (जैसे पुरंदरदास) के कार्यों से जुड़ी है। कर्नाटक संगीत में इस प्रकार का गायन, राग की विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा करने वाले मुक्त छंद (आमतौर पर कन्नड़ में) की विशेषता है, चाहे ताल के साथ हो या बिना ताल के।

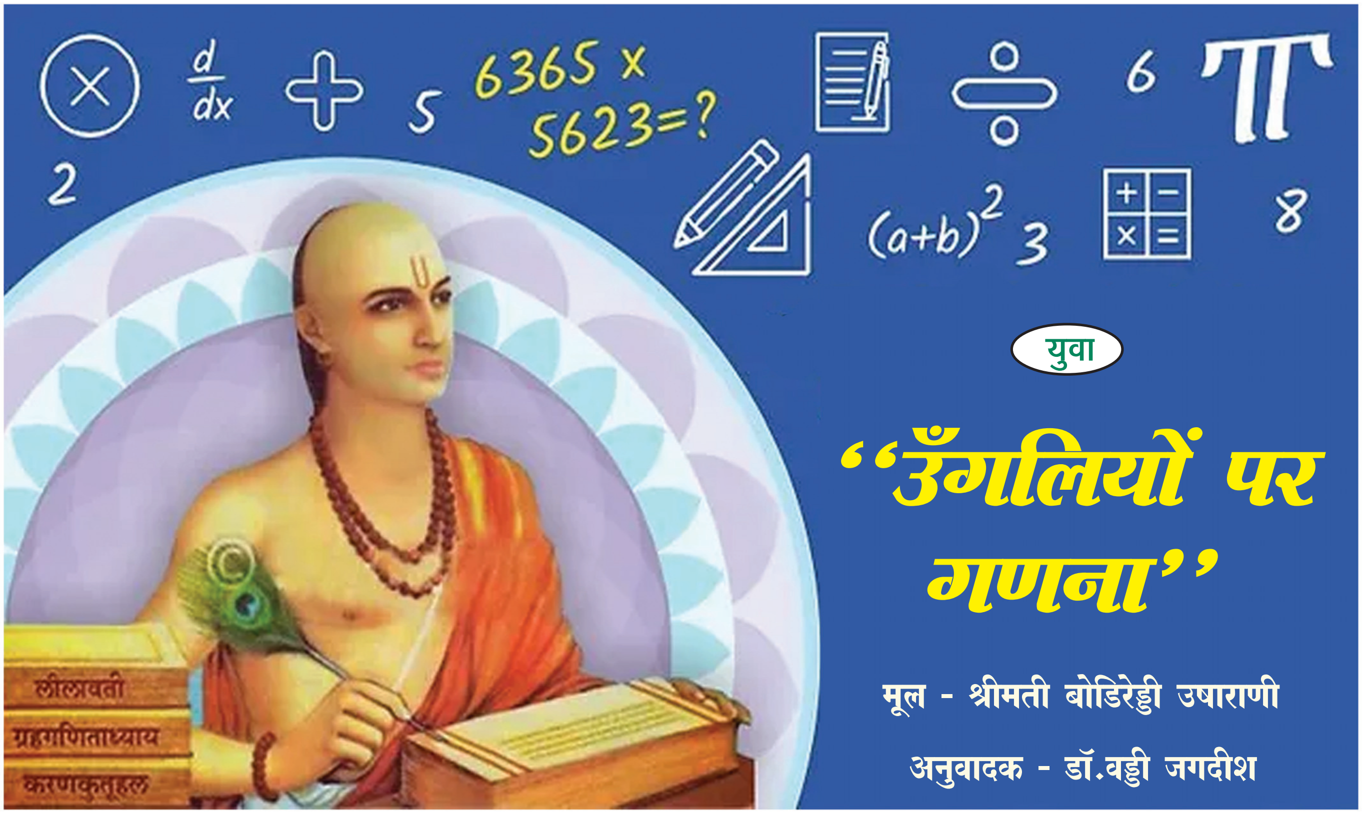

युवा

"उँगलियों पर गणना"

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

अगर आप को 5X5 की गुणना करना आता है, तो आसानी से उँगलियों पर गुणना कर सकते है, यहाँ गुणना करने के लिए दो प्रकार के रूप में विभाजन कर सकते हैं।

दस के अंदर गुणना

यहाँ दोनों हाथों की उँगलियों में से छोटी उँगली को 6 के रूप से, अनामिका को 7 से, बीच की उँगली को 10 से मानना चाहिए। फिर 6 से 10 तक गुणनों का इन की सहायता से गुणना कर सकते है। इस विधि बच्चों के खेल की तरह लगती है।

विधि

आप को जिस संख्या की गुणक चाहिए तो उसे संबंधित उँगलियों में उठाकर गुणना करना चाहिए। बाद सब संख्याओं को दश के रूप में मानना चाहिए। तुरंत दोनों तरफ जो उठी गयी उँगलियों को गुणना करने पर प्रथम स्थान मिलता है।

उदा : 9X9 का चाहिए तो...

9वीं उँगली को मिलाने से कुल 8 उँगलियाँ आती हैं। इन को दस के रूप में मानना चाहिए। दोनों तरफ बची हुई उँगली को गुणना करने पर 1X1=1 आता है। इसे प्रथम स्थान के रूप में मानना चाहिए।

ऐसे ही अब 9X9=81 बनता है। इसी सिलसिला में 9X6 चाहिता तो... 9वीं उँगली को 6वीं उँगली से जोड़ने पर 5 उँगलियाँ बनती हैं। यहाँ बचे तरह 1 उँगली दहिना तरफ 4 उँगलियाँ बचती हैं। इन को गुणना करने पर 1X4=4 बनता है। इसे प्रथम स्थान के रूप में लिखने पर 54 बनता है। ऐसे ही 10 के अंदर की संख्याओं के गुणकों का गुणना कर सकते है।

दस से बड़ी संख्याओं के गुणक

10 से जितनी बड़ी संख्या होती है उतनी उँगलियों को ऊपर उठना चाहिए। दोनों तरफ के जो ऊपर उठायी

गयी उँगलियों को गुणना करने पर जो फल आता है उसे प्रथम स्थान के रूप में लिखिए।

यहाँ दोनों तरफ के उठायी गयी उँगलियों को मिलाने पर जो अंक आता है उसे दशम स्थान पर लिखाना चाहिए। यहाँ दशम स्थान की संख्याएँ 1, 1 को गुणना करने पर 1X1=1 आता है। इसे सैकड़ स्थान पर लिखना चाहिए।

उदा : 12X13 का फल चाहिए तो...

पहले उँगलियों को फैलाना चाहिए। बहिना तरफ 2, दहिना तरफ 3, उँगलियों को उठाना चाहिए। यहाँ 2, 3 को गुणना करने पर 2X3=6 को प्रथम स्थान पर लिखना चाहिए।

यहाँ दशम स्थान की संख्याएँ 1, 1 का फल 1x1=1 को सैकड़ स्थान पर लिखना चाहिए।

अब 12X13 = 1X1, 2+3, 2X3= 156 बनता है

ऐसे ही 13X13 = 1X1, 3+3, 3X3= 169

12X14 = 1X1, 2+4, 2X4= 168

11X15 = 1X1, 1+5, 1X5= 165

12X15 = 1X1, 2+5, 2X5=

= 170

10

180 होता है।

14X14 = 1X1, 4+4, 4X4=

= 180

16

196

∴ ऐसे ही उँगलियों पर गुणकों को गुणना कर सकते है।

दस के अंदर के गुणक

जो गुणना करने वाले अंक अगर वे दस से छोटी संख्या होने पर उसे सामने लिखना चाहिए। तब उन को गुणना करने पर आनेवाली संख्या प्रथम स्थान की संख्या बनती है।

फिर 1 संख्या से दूसरी संख्या 10 से जितना कम है उसे निकलना चाहिए। तब वह दशम स्थान की संख्या बनती है।

उदा : 9X8 का चाहिए तो...

9-1

8-2

9-2, 1X2 = 72

ऐसे ही 7X7, 7-3

7-3

7-3, 3X3 = 49

7X8, 7-3

8-2

7-2, 3X2 = 56

∴ इस प्रकार उँगलियों पर खेलते हुए आसानी गुणना कर सकते हैं।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

5. मलैनाट्टुत् तिरुप्पतिहळ

(मलयालम / केरल राज्य के दिव्य क्षेत्र-13)

सामान्य जानकारी - आगे के 13 दिव्य क्षेत्र वैष्णवदिव्य क्षेत्र होने पर भी यहाँ पोती ब्राह्मणों अर्चकों के द्वारा पूजा की जाती हैं। प्रत्येक दिन तिरुमज्जन/ अभिषेक और श्रीवारि नाम में प्रचलित शोभा यात्रा प्राकार की परिक्रमा उत्सव भी होती है। चन्दन, तुलसी, पुष्प आदि प्रसाद दिया जाता है। इसका पूरा ध्यान रखते हैं कि उनके हाथ से हमारा स्पर्श न हो। आल्वार ने उन मंदिरों के भगवान को जिस नाम से मंगलाशासन किया हैं वह नाम यहाँ प्रचलित नहीं है। दूसरे नाम का प्रयोग करते हैं। यहा इन मंदिरों के - पूजा विधान पद्धति के अनुसार पूजा की जाती हैं। तायार-माताजी की सन्निधि नहीं होती। कुछ मंदिरों के गर्भगृह में भगवान की मूर्ति के पास तायार (माताजी) की छोटी मूर्ति होती है। कुछ में वह भी नहीं। एक मंदिर (तिरुवल्लवाळ) में विभूति प्रसाद भी दिया जाता है। पूजा करने वाले पोती लोग स्नान कर भीगे वस्त्र पहनते पूजा करते हैं।

गर्भगृह के पास एक मेडे-मंच होता है। सेवार्थियों को उसके आगे जाना मना है। यहाँ के मंदिरों में कुरता या पेंट पहन कर मंदिर के अन्दर जाना मना है। धोती (कपडा) पहन कर जाता है। स्वयं तिरुवांकूर महाराजा एवं दूसरे प्रतिष्ठित लोग भी किसी भेदभाव के बिना धोती। (कपडा) पहनकर ही मंदिर के अन्दर दर्शन करने जाते हैं। यह उत्तम प्रथा हैं। भारत के सभी मंदिरों में अनुकरणीय है। हाथ में कोई सामान ले जाना भी मना है। कुछ सामान हो तो वहाँ मंदिर द्वार पर (बिना शुल्क) सुरक्षित रखने का प्रबन्ध है।

केरल की सभी मंदिरों में इसका पालन किया जाता है। मंदिरों में सफाई एवं पवित्रता का ध्यान रखते हैं।

विशेष : यहाँ के मंदिरों में भगवती एवं शास्ता की मूर्तियाँ हैं। अलग सन्निधि होते है। ब्रह्मोत्सव, पवित्रोत्सव आदि मनाने की परंपरा नहीं है। यहाँ के पोती ब्राह्मण आदि मंत्र तंत्र के अनुष्ठान-प्रयोग में बडे सिद्ध-हस्त हैं।

पुरुष-सूक्त का पाठ करते हुए अर्चना की जाती है यहाँ के लोग आल्वार द्वारा अनुगृहीत 4000 दिव्य प्रबन्ध से परिचित नहीं है। यहाँ आल्वार दिव्य पदों के पाठ का क्रम भी नहीं हैं।

76. तिरुनावाय

चेन्नै-कोयंबत्तूर शोरनूर-काळिकट (कळिळक्कोट्टै) रेल मार्ग में तिरुनावाय रेल स्टेशन है। तिरुनावाय क्षेत्र एवं मंदिर रेल स्टेशन से 2 कि.मी. पर है। बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - नावाय्, मुकुन्दन, नारायणन्-पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - मलर मंगै नाच्चियार, शिसदेवी।

तीर्थ - चेंगमल सरस।

विमान - वेद विमान।

प्रत्यक्ष - गजेन्द्र, नव योगि।

विशेष - मंदिर भारत पुळा नदी किनारे पर है। इस क्षेत्र को काशी सदृश मानकर श्राद्ध आदि करते हैं। यह ऐतिह्य है कि यहाँ 9 योगी गणों ने यज्ञ किया इसलिए तिरुनवयोगि-वर्तमान प्रचलित नाम तिरुनावाय है। यहाँ गजेन्द्र ने भगवान की पूजा की थी। मलै नाट्टु दिव्य क्षेत्रों में सिर्फ इस मंदिर में लक्ष्मी की अलग सन्निधि हैं।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, 13 दिव्य पद। कुलशेखर आल्वार का अवतार स्थल तिरुमंदिर कुलम (अजकलम) जा सकते हैं।

77. तिरुवित्तुवक्कोडु - (तिरुविंजिक्कोडु)

चेन्नै-कोयंबत्तूर शोरनूर-कालिकट रेल मार्ग में पट्टांबि रेल स्टेशन से मंदिर 3 कि.मी. पर है। पट्टांबि स्टेशन में उतरकर भारत पुळा नदी पारकर मंदिर पहुँच सकते हैं। यह ऐतिह्य है कि पंच पांडवों ने यहाँ तपस्या की।

मूलमूर्ति - उय्यवन्द पेरुमाल, अभय प्रदान, दक्षिणाभिमुखी, खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - वित्तुवकोट्टु वल्लि, पद्मपाणि देवी।

तीर्थ - चक्र तीर्थ।

विमान - तत्वकाञ्चन विमान।

प्रत्यक्ष - अम्बरीश।

विशेष - मंदिर के प्रवेश द्वार पर सामने शिव भगवान की सन्निधि है। आगे पेरुमाल की सन्निधि है। यह ऐतिह्य है कि अंबरीष की प्रार्थना के अनुसार भगवान यहाँ चार रूपों में (व्यूह रूप) विराजमान हैं।

अंबरीष ने यहाँ मुक्ति प्राप्त की। पुराणों में इसका विवरण मिलता है कि बीच में विराजमान मूर्ति को धर्म पुत्र ने, पश्चिम में विराजमान मूर्ति को अर्जुन ने, बाई तरफ विराजमान मूर्ति को भीमसेन ने, और दाई तरफ विराजमान मूर्ति को नकुल एवं सहदेव ने पूजा की। इस प्रकार पंचपांडवों ने यहाँ पूजा की।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद कुलशेखर आल्वार को - श्रीरंगम के बाद प्रिय क्षेत्र (पडोसी)।

क्रमशः

(आयुर्वेद)

स्ट्राबरी / स्टॉबेरी

- डॉ.सुमा जोषि

स्ट्रॉबेरी, फ्रागार्य जाति का एक पेड होता है, जिसके फल के लिए इसकी विश्वव्यापी खेती की जाती है। इसके फल को भी इसी नाम से जाना जाता है। स्ट्रॉबेरी की विशेष गन्ध इसकी पहचान बन गयी है। ये चटक लाल रंग को होती है। इस ताजा भी, फल के रूप में खाया जाता है, साथ ही इसे संरक्षित कर जैम, रस, पाइ, आइस्क्रीम, मिल्क-शेक आदि के रूप में भी इसका सेवन किया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम है Fragaria Ananassa और कुल है Rosaceae। स्ट्रॉबेरी जीनस फ्रागार्य की एक संकर प्रजाति है।

इसको ''झूठा फल'' या स्यूडोकार्प कहा जाता है क्योंकि यह कई छोटे व्यक्तिगत फलों से बना एक बहुफल है। स्ट्रॉबेरी का फल वानस्पतिक बेरी नहीं है। युनिया भर में फ्रैगरिया की 20 से अधिक विभिन्न प्रजातियाँ हैं। स्ट्रॉबेरी की प्रजातियाँ उनके गुणसूत्रों की संख्या में भिन्न होती हैं। अधिक गुणसूत्रों वाली स्ट्रॉबेरी प्रजातियाँ अधिक मजबूत होती हैं। ''पाइन स्ट्रॉबेरी'', 1759 में इंग्लैंड के चेल्सी में पाई गयी थी। कीन्स इंपीरियल किस्म को 1806 में इंग्लैंड के आइलवर्थ के माइकल कीन्स द्वारा कई संकरों में से चुना गया था।

स्ट्रॉबेरी Rosaceae परिवार में एक कम उगनेवाला बारहमासी पौधा है, जो एक मांसल, लाल ''फल'' पैदा करता है, जो तकनीकी रूप से एक बडा पुष्प पात्र है, जिसकी सतह पर कई छोटे, अलग-अलग फल लगे होते हैं, जो छोटे बीज के रूप में दिखाई देते हैं; खाने योग्य भाग अण्डाशय से नहीं बल्कि फूल के कोष से प्राप्त होता है, जिससे यह एक झूठा फल या सहायक फल बन जाता है; पौधा धावकों के माध्यम से प्रजानन करता है और इसमें दाँतेदार किनारों के साथ त्रिपर्णीय पत्तियाँ होती हैं।

भारत में लोकप्रिय स्ट्रॉबेरी किस्मों में चाण्डलर, कैमरोसा, स्वीट चार्ली और नबीला शामिल हैं, जो अपने बडे आकार, रसदार गूदे और अद्वितीय स्वाद के लिए जाने जाते हैं। चाण्डलर को विशेष रूप से वाणिज्यिक और घरेलू उत्पादकों द्वारा पसन्द किया जाता है। अन्य उल्लेखनीय किस्में हैंः- सेल्वा, चढ़नेवाली स्ट्रॉबेरी की किस्में, दिन-तटस्थ स्ट्रॉबेरी पौधे, जून में फल देनेवाली स्ट्रॉबेरी इत्यादि।

स्ट्रॉबेरी में, पानी, कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में होते हैं, तथा इसमें थोडी मात्रा में प्रोटीन और वसा, विटामिन-सी, खनिज जैसे मैगंनीज हैं। इनमें एंटीऑक्सीडेंट जैसे Anthocyanins, Flavonoids और Phenolic compounds भी मौजूद हैं।

आरोग्य में स्ट्रॉबेरी का उपयोग

1) स्ट्रॉबेरी बहुत सेहतमंद होती है, इसमें कई एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन होते हैं। इनमें कैलोरी भी कम होती है, आधे कप में सिर्फ 32 कैलेरी होती है।

2) स्ट्रॉबेरी में कार्ब्स में मुख्य रूप से फाइबर और सरल शर्करा होती है। इनका जीआई अपेक्षाकृत कम होता है। इससे रक्त शर्करा के स्तर में बहुत अधिक वृद्धि नहीं होनी चाहिए।

3) स्ट्रॉबेरी विटामिन-सी का एक उत्कृष्ट स्रोत है, जो प्रतिरक्षा और त्वचा के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक एंटीऑक्सीडेंट है।

4) स्ट्रॉबेरी में मैंगनीज मौजूद होता है, जो शरीर में कई प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण तत्व है।

5) स्ट्रॉबेरी में फोलेट (विटामिन - बी9) मौजूद होता है। फोलेट सामान्य ऊतक वृद्धि और कोशिका कार्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। गर्भवती महिलाओं और वृद्ध वयस्कों के लिए महत्वपूर्ण है।

6) स्ट्रॉबेरी में पोटेशियम मौजूद होता है। यह खनिज शरीर के कई जरूरी कार्यों में शामिल होता है। जैसे रक्तचाप को नियंत्रित करना।

7) दृष्टि में सुधार : दृष्टि एक अनमोल उपहार है और स्ट्रॉबेरी इसे सुरक्षित रखने में मदद कर सकती है। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर स्ट्रॉबेरी मोतियाबिन्द को रोकने में मदद कर सकती है, जो आंखों के लेंस को धुंधला कर देती है और दृष्टि को खराब कर देती है। इनमें विटामिन-सी की भी अच्छी मात्रा होती है, जो UV के किरणों के मुक्त कणों से बचाता है। इसके अतिरिक्त, विटामिन-सी Cornea और Retina को मजबूत करता है, जिसमें मोतियाबिन्द का खतरा कम होता है, खासकर 65 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में लाभकारी है।

हृदय स्वास्थ्य

भारत में हृदय रोग मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है। हालाँकि, अपने आहार में स्ट्रॉबेरी को शामिल करना हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। शोध से पता चलता है कि स्ट्रॉबेरी HDLC (अच्छे कोलोस्ट्रॉल) के स्तर को बढ़ा सकती है, रक्तचाप में सुधार कर सकती है और प्लेटलेट फंक्शन का समर्थन कर सकती है। वे निम्न में भी प्रभावी हैं :

i. रक्त एंटीऑक्सीडेंट स्थिति में सुधार।

ii. ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करना।

iii. सूजन को कम करना।

iv. संवहनी कार्य को बढ़ाना।

v. रक्त लिपिड प्रोफाइल को आगे बढ़ाना।

vi. LDL (सराब कोलेस्ट्रॉल) के ऑक्सीकरण को कम करना।

8) कोलेजन टूटने को रोकने और सूजन प्रतिक्रियाओं को कम करने से, स्ट्रॉबेरी प्रभावी रूप से झुर्रियों के गठन का मुकाबला करती है, जिससे उन्हें जीवन्त, चमकदार त्वचा के लिए आहार में शामिल करना आवश्यक हो जाता है।

9) स्ट्रॉबेरी विटामिन-सी का एक उत्कृष्ट स्रोत है, जो मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

10) स्ट्रॉबेरी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट, फोलेट और विटामिन-सी मूड को बेहतर बनाने और तनाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निमाते हैं।

11) स्ट्रॉबेरी में Anthocyanins जैसे Flavonoids होते हैं, जो संज्ञानात्मक कार्य को बेहतर बनाते हैं और उम्र से सम्बन्धित मानसिक गिरावट के जोखिम को कम करते हैं।

12) नियमित सेवन से जोडों की सूजन कम हो सकती है और गठिया का खतरा कम हो सकता है।

13) शोध से पता चला है की यह फल मोटापे या अधिक वजनवाले कुछ लोगों में भोजन के बाद रक्तशर्करा में वृद्धि को कम करता है।

14) एक शोध अध्ययन में, हृदय सम्बन्धी जोखिम कारकों के परिणामों को समयोजित करने के बाद, लेखकों ने निष्कर्ष निकाला कि फ्लेवोनोइड्स से भरपूर आहार स्ट्रोक के जोखिम को मामूली रूप से कम कर सकता है।

15) स्ट्रॉबेरी का सेवन करने से मुंह, स्तन, फेफडे और ग्रासनली के कैंसर से कुछ हद तक सुरक्षा मिल सकती है, लेकिन इस पर और अधिक शोध की आवश्यकता है।

16) स्ट्रॉबेरी में फाइबर होने के कारण यह कब्ज को नियन्त्रित करने में मदद करता है।

17) स्ट्रॉबेरी में फोलेट होता है, जो गर्भावस्था के शुरुआती दिनों में स्वस्थ तंत्रिका ट्यूब विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

18) स्ट्रॉबेरी अल्जाइमर रोग के जोखिम को कम करने में भी मदद कर सकती है।

19) अन्य जामुनों की तरह स्ट्रॉबेरी भी अपनी उच्च एंटीऑक्सीडेंट सामग्री के कारण महिला प्रजानन क्षमता में योगदान दे सकती है, जो अण्डों को क्षति से बचाने में मदद करती है और समग्र प्रजानन स्वास्थ्य का समर्थन करती है।

20) जामुन में सूजनरोधी फाइटोन्यूट्रिएंट्स होते हैं जो प्रजानन प्रणाली में सूजन को कम करने में मदद कर सकते हैं, जो प्रजानन क्षमता के लिए फायदेमंद हो सकता है।

स्ट्रॉबेरी खाने में सावधान

1) स्ट्रॉबेरी उन लोगों में एलर्जिक रियक्शन पैदा कर सकती है जो Rosaceae परिवार के प्रति संवेदनशील हैं। इस परिवार के सदस्यों में खुबानी, बादाम, बेर, आड़ू, नाशपाती और सेब शामिल हैं।

2) कुछ लोगों को इस बात की चिंता है कि ज्यादा मात्रा में स्ट्रॉबेरी का उपयोग करने से रक्तस्राव का समय बढ़ सकता है और रक्तस्राव विकारों वाले कुछ लोगों में चोट लगने और रक्तस्राव का जोखिम बढ़ सकता है। अगर आपको रक्तस्राव विकार है, तो स्ट्रॉबेरी का उपयोग सावधानी से करें।

3) स्ट्रॉबेरी का अधिक मात्रा में सेवन करने से रक्त का थक्का जमना धीमा हो सकता है। कुछ लोगों को इस बात की चिन्ता है कि इससे सर्जरी के दौरान और बाद में रक्तस्राव की सम्भावना बढ़ सकती है। निर्धारित सर्जरी से कम से कम 2 सप्ताह पहले स्ट्रॉबेरी का सेवन बन्द कर दें।

''स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।''

अप्रैल-2025 महीने का क्विज-33 के समाधान

1) श्रीराम, 2) तुलसीदास,

3) श्रीनिवास, 4) हेमकूट विमान,

5) परशुराम, 6) अनसूया-अत्रि,

7) श्रीराम, 8) अक्षय तृतीया,

9) चंदनोत्सव,

10) बाँध, 11) श्रीराम,

12) श्रीराम, 13) चार,

14) कर्ण, 15) कंदली.

जून महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - मंगल पंचम भाव में संचार करने तथा शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव से स्वास्थ्य परेशानी व चोटादि का भय रहेगा। सुख-समृद्धि की प्राप्ति, नूतन-वस्त्र-अन्न आदि प्राप्ति। आवश्यकता योग्य धन मिलेगा, व्यर्थ की दौड़धूप अधिक रहेगी, गृहस्थ जीवन सुखमय। परिवार एवं मित्रों के साथ मतान्तर, संतान सुख, संवाद से हर्ष, उत्तरार्ध उत्तम रहेगा।

वृषभ राशि - यह माह आपके लिए शुभ रहेगा, शुक्र व्यय भाव में होने के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा अनावश्यक धन खर्च। कार्य क्षेत्रों में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। सामाजिक विकास, दैनन्दिन जीवन की नियमितता से स्वास्थ्य उत्तम। गृह-भूमि, कृषि कार्यों में श्रम अपेक्षित, व्यापार में उन्नति।

मिथुन राशि - इस महीने आपका मन अशान्त एवं व्याकुल रहेगा, स्वास्थ्य समस्या, संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। अपने वाणी व्यवहार पर नियन्त्रण रखे वरना नौकरी में उच्चाधिकारियों से वैमनस्ता, सम-सामयिक परेशानियों में वृद्धि, पूर्व सोची योजनाओं में प्रगति। रुके हुए कार्यों में सिद्धि।

कर्कटक राशि - अत्यन्त कठिनाई के उपरान्त निर्वाह योग्य धन प्राप्ति, अष्टमस्थ मंगल-शनि से स्वास्थ्य चिन्ता, चोट-दुर्घटना जनित कष्ट। कारोबार में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी, धार्मिक कार्यों में रुचि बढेगी, व्यापार क्षेत्र में अनुकूलता। रुके कार्यों में प्रगति, नौकरी सुखद, सम्मान प्राप्ति, गृहस्थ जीवन निभाने में कठिनाई। नित्य दुर्गा-सप्तशती का पाठ श्रेयस्कर रहेगा।

सिंह राशि - शारीरिक-मानसिक स्थिति उत्तम, गृह-भूमि कार्यों में सफलता, केतु के संचार के कारण घरेलु एवं व्यवसायिक परेशानियों के कारण गुप्त चिन्ताएँ रहेंगी। सहयोगियों से कष्ट, अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे जिससे क्रोध एवं उत्तेजना के कारण कोई कार्य बिगड़ सकता है। उद्योग-व्यापार में सफलता।

कन्या राशि - बुध दशमभावस्थ होने से दैनिक कार्यों में प्रगति धीरे-धीरे होगी। मास के पूर्वार्ध में मिला जुला प्रभाव दिखेगा, धन की तंगी, व्यापार सामान्य रहेगा, व्यर्थ यात्रा। भूमि-वाहनादि के क्रय-विक्रय की योजना बनेगी, मास का उत्तरार्ध शुभ रहेगा। दाम्पत्य जीवन में मन-मुटाव दिखेगा, छात्रों को परिश्रम करने से प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता।

तुला राशि - शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से नौकरी में पदोन्नति व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। शुभ विचारों का मन में उदय, सुन्दर-सुखद वातावरण, नियमित दिनचर्या, आर्थिक समुन्नति। विद्या-बुद्धि का विकास, रोजी-रोजगार में सफलता, शुभ यात्रा।

वृश्चिक राशि - यह माह आपको विचलित कर सकता है, अन्तर्द्वन्द बना रहेगा, अव्यवस्था के कारण दिनचर्या में अनियतता होगी जिस कारण स्वास्थ्य समस्या, भोजन अपच्य होने के कारण उदर विकार। मंगल की दृष्टि रहने से व्यवसायिक क्षेत्रों में विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

धनुष राशि - शनि की ढैय्या के कारण स्वास्थ्य समस्या, शारीरिक कष्ट और पारिवारिक चिन्ता रहेगी। परिश्रम-प्रयास और चातुर्य से कार्यसिद्धि, लाभ से अधिक हानि होने के कारण मानसिक तनाव। पारिवारिक तनाव एवं उलझनें रहेंगी, अकस्मात यात्रा, संतान सुख, मास के उत्तरार्ध में कुछ अनुकूलता बनेगी जिससे कुछ मन प्रसन्न रहेगा।

मकर राशि - स्वस्थ शरीर, कार्य सुख, आत्मविश्वास में वृद्धि, निर्माण कार्यों में उत्तरोत्तर प्रगति, आर्थिक संतुलन, अभीष्ट सिद्धि, गृह प्राप्तिक सुख। शनि तृतीयस्थ तथा मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक सम्बन्ध रहने से बनते कामों में विघ्न, साधारण लाभ एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी हो सकता है।

कुंभ राशि - मंगल-केतु सप्तम में, शनि-साढ़ेसाती के कारण स्वास्थ्य परेशानी, मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न एवं धन का खर्च अधिक रहेगा। अपने व्यावहारिक जीवन के ऊपर नियन्त्रण रखना आवश्यक है, धनागम में बाधा, व्यापार सामान्य, छात्रों को सफलता के लिए विशेष परिश्रम की आवश्यकता। गुरु की दृष्टि के कारण उच्चप्रतिष्ठित पद एवं धन लाभ।

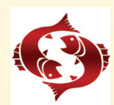

मीन राशि - लग्नस्थ शनि पर मंगल की अष्टम दृष्टि रहने से अत्यधिक परिश्रम के बाद ही भूमि-जायदाद, सन्तानादि सुखों का योग बनेगा। शारीरिक सुख, कार्य क्षेत्र का विस्तार, आर्थिक विकास, आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजन कार्यों पर खर्च होगा।

(नीतिकथा)

गरीब की भेंट

- श्री के.रामनाथन

भरतपुर देश का एक छोटा गाँव है किशनगढ़ और वहाँ खेती करना ही प्रधान काम है। भरतपुर के राजा प्रतापसिंह बड़ा न्यायप्रिय एवं महान दानी भी है। वह अपने देश में कलाओं के विकास के लिए योग्य कलाकारों को उचित सम्मान देता था। उसके पास आने वाला कलाकार अपनी क्षमता प्रदर्शित करके पुरस्कार के साथ लौटते थे। राजा के ऐसे कार्य से सभी कलाकारों में बड़ा उत्साह था। किशनगढ़ में शैलेश्वर नामक एक युवक था। उसके माँ-बाप कोई नही थे। वह अपने परिश्रम से जो मिलता उससे अपना जीवन गुजारा करता था। गाँव में जो भी काम हो वह उसे बड़े उत्साह के साथ करता था और लोग जितना देते थे उससे वह संतुष्ट होता था।

उसका मित्र राजसेन एक कलाकार था, वह काट(लकड़ी) से भिन्न-भिन्न मूर्तियों को बनाने की कला जानता था। वह काट से अनेक मूर्तियाँ बनाकर उसे पड़ोस के गाँव में ले जाकर बेचा करता था। एक दिन उसे यह खबर मिली का राजा प्रतापसिंह कलाकारों का सम्मान करते हैं। उसके मन में यह इच्छा पैदा हुई कि राजा से मिले और अपनी दक्षता प्रदर्शित करके राजसम्मान प्राप्त करें। वह अपनी इच्छा को मित्र शैलेश्वर से बताकर राजा से मिलने निकल पड़ा। शैलेश्वर भी इस बात से प्रसन्न था कि अपने मित्र को राजसम्मान मिलने वाला है। दस दिन बाद कलाकार मित्र राजसेन एक घोड़े की गाड़ी में अनेक पुरस्कार के साथ अपने गाँव वापस लौटा। मित्र को देखकर शैलेश्वर ने पूछा, ''क्या ये सब राजा से दिये गये पुरस्कार हैं?'' राजसेन ने उसे सारी बातें सुनायी और यह भी बताया, ''राजा प्रतापसिंह पराक्रमी ही नहीं महान दानी भी हैं। उन्हें यही इच्छा है कि अपने देश में गरीब कोई भी न हो। इसलिए वे अपने पास आने वाले गरीब और कलाकारों को उचित पुरस्कार देकर उनकी गरीबी दूर करते हैं।'' मित्र की बात सुनकर शैलेश्वर ने निश्चय कर लिया कि ऐसे राजा को समक्ष मिलकर उनके कार्य के लिए धन्यवाद देना चाहिए।

उसके बाद वह एक दिन राजा से मिलने राजधानी की ओर निकल पड़ा। लंबी यात्रा के बाद वह राजधानी आ पहुँचा और राजमहल के भीतर प्रवेश करने का प्रयास किया। उसे देखकर वहाँ के सिपाहियों ने उसे रोका और पूछा, ''तुम कौन हो। किसलिए यहाँ आए हो?'' शैलेश्वर ने सच सच बता दिया कि मुझे राजा से मिलना है। यह सुनकर वे सिपाही हंस पड़े। उन्होंने बताया, ''राजा तुम जैसे फटे-गंदे कपड़े पहने लोगों से नहीं मिलेंगे। वे सिर्फ उत्तम कलाकारों से ही मिलेंगे। तुम तो एक आम नागरिक हो। तुम जैसे लोगों से यदि राजा रोज मिलते रहेंगे तो राजाकाज का कार्य कैसे चलेगा। इसलिए तुम अभी अपने गाँव लौट चलो।''

सिपाही की बात से शैलेश्वर का मन उदास हुआ। वह दुखित मन से ऐसे ही आ रहा था। अधिक दूर पैदल आने के कारण बहुत थका-मांदा वह एक घर के पास ही लेटकर आराम करने लगा। रात होने वाली थी और उस समय वहाँ आया एक सिपाही ने उससे पूछ-ताछ की और समझाया कि तुम जैसे लोगों के ठहरने के लिए राजा ने एक धर्मशाला बनायी है। वह यहाँ से थोड़ी दूर पर है, इसलिए तुम वहाँ जाकर आराम करो। उसकी बात के अनुसार शैलेश्वर धर्मशाला की ओर निकल पड़ा। इतने में रात हो गयी थी और वह थकावट के मारे रास्ते के किनारे ही एक पेड़ के नीचे ऐसे ही सो गया।

यकायक वह जाग उठा और देखा कि कोई आदमी उसे जगा रहा है। असल में वह आदमी देश का राजा प्रतापसिंह था और वह छदमवेश में आया था। उस आदमी ने जरा कठोर आवाज में उससे पूछा, ''तुम कौन हो। यहाँ क्यों सो रहे हो? क्या तुम चोरी करने यहाँ आये हो?'' यह सुनकर शैलेश्वर ने जवाब दिया, ''साहब! मैं कोई चोर नहीं हूँ। मैं राजमहल में राजा प्रतापसिंह से मिलने आया था। लेकिन वहाँ के सिपाही ने मुझे अन्दर जाने की अनुमति नहीं दी। बहुत दूर से आने के कारण थकावट के मारे यहाँ सो गया'' उसका जवाब सुनकर उस पर विश्वास न करते हुए उसने उसके हाथ के गट्ठार को देखकर उससे पूछा, ''इसे खोलकर दिखाओं, देखेंगे कि इसके अन्दर तुमने क्या चोरी करके रखी है?''

यह सुनकर शैलेश्वर ने कहा, ''साहब! इस गट्ठार में सिर्फ कपड़े और जूते हैं।'' इतना कहकर उसने गट्ठर खोलकर दिखाया। राजा ने देखा कि उसमें रेशम के कीमती कुरते और धोती हैं और कीमती जूते भी हैं। यह देखकर उसने शैलेश्वर को देखकर कठोर आवाज में पूछा, ''तुम तो फटे गंदे कपडे पहने हो। लेकिन तुम्हारे पास ये कीमती परिधान कैसे आये हैं? सच सच बताओ तुमने इन सबको कहाँ चोरी की है?''

शैलेश्वर ने कहा, ''साहब! मैं महाराज से मिलकर उनकी दयालुता और दानशीलता के लिए भेंट देने के रूप में अपने परिश्रम से कमाये पैसों से इन सबको खरीद लाया था। लेकिन मेरा दुर्भाग्य राजा से नहीं मिल सका।''

उसका जवाब सुनकर उस आदमी ने कहा, ''मैं इस देश का राजा प्रतापसिंह हूँ और मैं नगरवासियों की दशा जानने के लिए समय समय पर छदमवेष में निकल पड़ता हूँ, जिससे जनता के विचार को साफ समझकर शासन करें। अब तुम ऐसा करो, इस भेंट को मुझे दे दो, मैं उन्हें पहनकर कल राजदरबार में तुम्हारी इंतजार में रहूँगा, तुम कल वहाँ आकर मुझसे मिलना और तुमको कोई सिपाही नही रोकेगा।'' इनता कहकर उससे भेंट लेकर राजा वहाँ से निकल गया।

राजा के ऐसे कथन और कार्य से शैलेश्वर बहुत प्रसन्न हुआ। अगले दिन राजा शैलेश्वर से दिये गये परिधान को पहनकर उसकी इंतजार में अपने दरबार में बैठा था। समय चलता रहा, पर वह आया नहीं। राजा ने तुरंत अपने दो सैनिकों को बुलाकर शैलेश्वर को ढूँढ लाने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञानुसार वे सिपाही उसे ढूँढने गये और दोनों ने उसे नगर की सीमा पर पकड़ लिया। उन्होंने उसे राजा के सामने प्रस्तुत किया। राजा ने जरा कठोर आवाज में पूछा, ''मैंने तुमसे अगले दिन सबेरे दरबार में आकर मिलने को कहा था। परंतु तुमने मेरी आज्ञा को ठुकारा दिया है। इसका कारण क्या है?''

शैलेश्वर ने कहा, ''राजन्! आपका कहना सत्य है। परंतु मुझे यही इच्छा थी कि राजा से मिलना और उनके कार्य के लिए भेंट देना था। यह तो कल ही पूर्ण हो गया। मेरे इस गरीब की भेंट को आपने स्वीकार कर लिया और मेरा काम भी पूरा हो गया। इसलिए मैं अपने गाँव की ओर निकल गया। इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है।''

शैलेश्वर की बात सुनकर राजा प्रसन्न हुआ। उसने ऐसे ईमान्दार और परिश्रमी को उचित सम्मान करना चाहा। थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसने यह आज्ञा दी, ''ईमान्दार और परिश्रमी तुमको मैंने अपना अंगरक्षक बना दिया। इसलिए तुम आज से मेरे राजमहल में काम करो।''

राजा की यह आज्ञा सुनकर शैलेश्वर अत्यंत खुश हुआ। वह राजा का अंगरक्षक बनकर उसकी सेवा में अपना जीवन बिताने लगा।

यह तो सत्य है कि इस संसार में ईमानदारी और परिश्रमी का उचित सम्मान होता है।

चित्रकथा

श्रीकृष्ण की लीला

तेलुगु मूल - श्रीमती जे.पद्मिनी प्रियदर्शिनी
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

बाल श्रीकृष्ण उस अजगर के शरीर के भीतर नहीं गया। उसके गले के पास ही रूक गया।
12
मायावी सोचने लगा कि कृष्ण क्यों रूक गया।
14
मुझे अब मेरा काम करना पडेगा।
13
इतने में श्रीकृष्ण अपना शरीर बडाने लगा।
15
अचानक कृष्ण का शरीर बड गया।
16
अजगर के रूप में रहनेवाला राक्षस का गला बंद हो जाने से उसे दम गुटने लगा
17
मुझ को पता नहीं चलेगा क्या हो रहा है?
18
अजगर तडप तडप कर शर को जमीन से पीट लिया
19
मुझ को विमुक्ति मिलेगी क्या?
20
थोडी देर के बाद उसका शर टुकडे हुआ। उसके शरीर में से बालगोपालक, श्रीकृष्ण बाहर आया।
21
यह सब कुछ बाल श्रीकृष्ण का दिव्य महिमा है। उस अजगर के शरीर से एक प्रकाश का पुंज निकल कर कृष्ण में ही लीन हो गया।
22
अघ ने शाप के कारण राक्षस का रूप धारण किया। कृष्ण भगवान के प्रवेश से मुक्ति पा लिया।
23
धन्य हूँ स्वामी। मैं आप के दर्शन पा सका।
24
नीति : ईश्वर की महिमा सारे पापों को हटा करती है।
25
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु............, **चंदा नंबर**........................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-35

1) बालाजी का बडे भाई का नाम क्या है?
ज)..
2) श्री गोविंदराजस्वामी किस भंगिमा में विराजित हुए है?
ज)..
3) ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव को कितने दिन संपन्न करते है?
ज)..
4) नारद महर्षि ने विवाह सिद्धि के लिए किस से बात किया?
ज)..
5) श्रीनिवास ने किस जानवर पर सवार होकर वन को पहुँचा?
ज)..
6) 'दया शतकम्' ग्रंथ का लेखक कौन है?
ज)..
7) तिरुमल में पुष्पोद्यान के लिए रामानुज ने अपने शिष्यों में किस को भेज दिया था?
ज)..
8) श्री श्रीपादराज ने तिरुमल पहाड को किस तरीका से पहुँचे?
ज)..
9) अप्पलायगुंटा में विराजित मूर्ति का नाम क्या हैं?
ज)..
10) तिरुनावाय क्षेत्र का विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
11) तिरुनावाय क्षेत्र में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..
12) तिरुवित्तुवक्कोडु (तिरुविंजिक्कोडु) क्षेत्र में विराजित मूर्ति का नाम क्या है?
ज)..
13) पूरी, ओडिशा में विराजित मूर्तियों का नाम क्या है?
ज)..
14) गोविंदराजस्वामी मंदिर के सामने उपस्थित देवता मूर्ति कौन है?
ज)..
15) स्ट्राबेरी का वैज्ञानिक नाम क्या है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

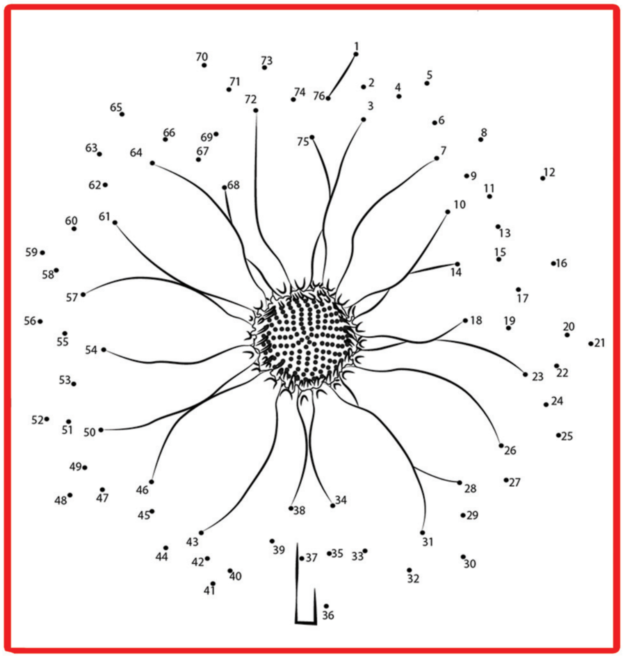

रंगों को भरिये क्या!

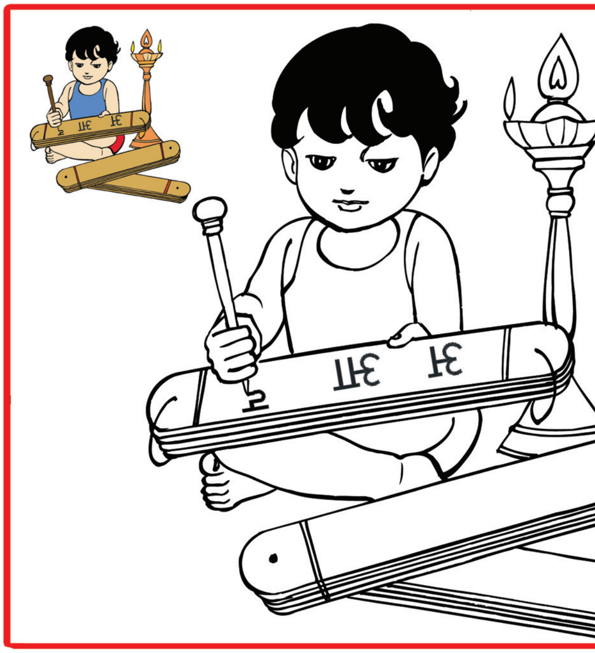

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) तरिगोंडा वेंगमांबा	अ) भागवतम्
2) वाल्मीकि महर्षि	आ) वेंकटाचल माहात्म्यम्
3) सुप्रसिद्ध तेलुगु कवि पोतना	इ) रामचरितमानस
4) तुलसीदास	ई) प्रतिवादि भयंकर अण्णंगराचार्य
5) श्री वेंकटेश्वर सुप्रभात लेखक	उ) रामायण

1) आ 2) उ 3) अ 4) इ 5) ई

श्रीकृष्ण स्तुति

नमो विश्वस्वरूपाय विश्वस्थित्यन्तहेतवे।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविंदाय नमो नमः।
नमो विज्ञानरूपाय परमानंदरूपिणे।
कृष्णाय गोपिनाथाय गोविंदाय नमो नमः।।

चित्रों को जोडिएँ

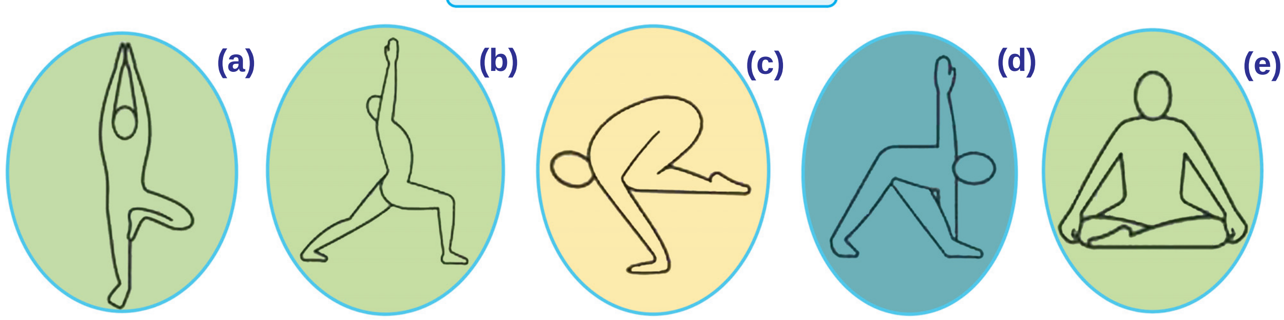

(1) **बकासन** (2) **सिद्धासन** (3) **त्रिकोणासन** (4) **वीरभद्रासन** (5) **वृक्षासन**

जवाब : a) 5, b) 4, c) 1, d) 3, e) 2.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

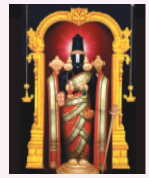

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
ई.एम.ओ. (EMO) :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

....

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijaya Kumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 30-04-2025 को विशाखपट्टणम्, सिंहाचलम् क्षेत्र में विराजित श्री वराह लक्ष्मीनृसिंह स्वामीजी को अक्षयतृतीया के दिन चंदनोत्सव के अवसर पर ति.ति.दे. की ओर से ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी ने रेशमी वस्त्र को समर्पित करते हुए दृश्य।

श्रीरामनवमी के संदर्भ में दि. 06-04-2025 को तेलंगाना राज्य, भद्राचलम् में विराजित भगवान श्रीरामजी को श्री सीताराम कल्याणोत्सव के अवसर पर ति.ति.दे. की ओर से रेशमी वस्त्र को समर्पित करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी।

दि. 23-04-2025 को ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामीजी को हीरे जड़ित स्वर्ण मुकुट को समर्पित करते हुए दाता पेन्ना सिमेंट का प्रधान अधिकारी श्री प्रताप रेड्डी जी ने ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी और ति.ति.दे. का ई.ओ. जी को सौंपते हुए दृश्य।

दि. 06-04-2025 को तिरुमल श्री बालाजी का दर्शनानंतर सुप्रीम कोर्ट मुख्य न्यायाधीश जस्टीस संजीव खन्ना जी को तीर्थ प्रसाद और ति.ति.दे. कैलेंटर को देते हुए ति.ति.दे. का ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., और ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. श्री सी.एच.वेंकय्याचौदरी, आई.आर.एस.

दि. 19-04-2025 को तिरुमल पहला घाटरोड अंतिम सीढ़ि पर 'स्वच्छांद्रा-स्वच्छ तिरुमल' कार्यक्रम में ति.ति.दे. कर्मचारियों से 'स्वच्छांद्रा प्रतिज्ञा' कराते हुए ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. श्री सी.एच.वेंकय्याचौदरी, आई.आर.एस., जी।

दि. 20-04-2025 को तिरुमल मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसाद केंद्र में भक्तों को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडूजी ने अन्न-प्रसाद को वितरण करते हुए दृश्य।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-05-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.